नवनीत

ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट

अतुल्य भारत!

वसुधैव कुटुम्बकम्
पूरी दुनिया एक ही परिवार है।

Bharatiya Vidya Bhavan AUSTRALIA

www.bhavanaustralia.org

काव्य | साहित्य | शिक्षा | संस्कृति | दर्शन

सितंबर 2012, अंक 1 नंबर 5 (Vol 1. No. 5) | ISSN 2200 - 7644

शब्द-यात्रा

नवनीत भारत से

'पात्र' बर्तन से लेकर रंगमंच तक

● आनंद गहलोत

'पात्र' शब्द का अर्थ योग्य, लायक व्यक्ति है; लेकिन शब्दों के शैशव काल में ऋग्वेद (1-17 5-3 और 4-17-4) में पात्र का एक ही अर्थ था— 'बर्तन'; वह भी पानी पीने का बर्तन. 'पात्र' वैदिक भाषा की 'पा' धातु से बना है, जिसका एक अर्थ है 'पीना'. 'पेटा' का मूल वंशज भी 'पा' शब्द है.

बाद में पानी या दूध पीने के ही नहीं, किसी भी बर्तन को 'पात्र' कहा जाने लगा; चाहे उसमें रखी हुई वस्तु तरल न होकर ठोस ही क्यों न हो. पात्र के पेट में और भी अर्थ समाते गये; यहां तक कि नदी के विशाल 'पाट' (दो तटों के बीच का स्थान) का मूल भी 'पात्र' शब्द है (यूरोपीय भाषाओं का 'पॉट' और 'प्लेट' और ईरानी भाषाओं का विशाल (प्याला) भी कालांतर में 'पात्र' के ही देशज और विभिन्न कालज रूप हैं. यूरोपीय भाषाओं में 'त' 'ट' में बदलता है. यूरोप में 'पात्र' का 'र' लुप्त हो गया, ईरान में 'ल' में बदल गया.

भारत में 'पात्र' के रूप में थोड़ा-सा परिवर्तन कर विभिन्न शम्ल-सूरत के बर्तनों की संख्या में वृद्धि होती रही; जैसे 'परात', 'पतीला', 'पतीली' सभी 'पात्र' शब्द-परिवार के हैं.

पात्र की विशेषता है कि उसमें जो भी रखो, वह खुद हज़्म नहीं करता, वैसा ही लौटा देता है. वैदिक युग में 'पात्र' केवल निर्जीव पदार्थ के अर्थ में सीमित रहा; लेकिन सम्भाल कर रखने की पात्र की क्षमता के कारण. कुछ पाने या लेने की क्षमता या योग्यता वाले व्यक्ति को भाव-सादृश्य के आधार पर पात्र (या सुपात्र) कहना शुरू हो गया. महाभारत काल में 'भगवत गीता' में 'पात्र' शब्द सम्भवतः पहली बार सजीव अर्थ में प्रयोग में आया. 'पात्र' शब्द में प्राणों की स्थापना हो गयी. फिर क्या था, 'पात्र' शब्द के अर्थ-विस्तार का मार्ग प्रशस्त हो गया. नाटक में अभिनेता द्वारा अभिनीत चरित्र 'पात्र' कहा जाने लगा.

अर्थ-विस्तार होने पर भी 'पात्र' का अर्थवाची 'बर्तन' अपने मूल अर्थ की सीमाओं से बाहर नहीं निकल पाया. हां, 'बर्तन' भांडे शब्द में संस्कृत आये 'भांडे-भंड' शब्द का मूल अर्थ यद्यपि बर्तन था लेकिन कालांतर में 'भांड' 'पात्र' की तरह कलाकारों की दुनिया में प्रवेश कर गया. उसका एक और भी अर्थ हो गया विदूषक, कलाकार.

साभार: नवनीत हिन्दी डाइजेस्ट, अगस्त 2012

कुलपति उवाच

ईश्वरपद तक चढ़ना होगा

गीता कर्मयोग का शास्त्र है. मनुष्य को कर्म करने का उपदेश देने वाला प्रेरणा-संदेश है. तप, चिंतन या समाधि द्वारा संसार से भाग खड़े होने की बात श्रीकृष्ण को नहीं रुचती. संसार में अपने हिस्से में आये हुए कर्मों से या मनुष्यों से बसे हुए स्थानों से भागकर अरण्य के एकांत में जा घुसने का उपदेश वे नहीं देते. वे हमें ऐसा उपदेश भी नहीं देते कि गुफाओं के या गिरि शिखर के विजन में बैठकर शांति प्राप्त करो. इसी प्रकार वे यह भी नहीं कहते कि नपुंसक- नामर्द-की तरह संसार छोड़कर भाग जाओ. मैं नहीं लड़ूंगा कहकर अर्जुन भाग खड़ा होना चाहता है. तब भगवान श्रीकृष्ण उससे कहते हैं-

"हे अर्जुन, इस विषम स्थान में- रणक्षेत्र में- यह अज्ञान क्यों उत्पन्न हुआ? यह न तो आर्यों के योग्य कार्य है और न स्वर्ग तथा कीर्ति देने वाला है. हे अर्जुन, कायर मत बनो, यह तुम्हारे योग्य नहीं है. हे परंतप, अपने हृदय की दुर्बलता त्याग कर युद्ध करें."

ये शब्द मनुष्य को उत्साहित- उत्तेजित करने वाले हैं. इनमें ऐसा बल है कि सुनने वाले की क्षात्रवृत्ति जागृत हो सकती है. इन शब्दों ने अनेक शांत हृदयों में आशा उत्पन्न की होगी. अनेक भीरु हृदयों में साहस, शौर्य और धैर्य की प्रतिध्वनियां की होंगी. गीता में परलोक-परायणता बिंदु मात्र नहीं है. यहां, इस जगत में ही, जीत कर स्वर्ग प्राप्त करना है. कर्म के पाशों का छेदन करना है- इसी जन्म में, अगले जन्म में नहीं.

यदि साधक निर्बल हो, तो उसे प्रवास लम्बा करना पड़ेगा- या तो एक जन्म में परागति मिले, या इसके लिए अनेक जन्म भी लेने पड़ें. जो साधक दृढ़ निश्चय वाला है, उसे यह संसिद्धि इस जन्म में ही प्राप्त हो जायगी.

आज हमारा है- फिर भय कैसा? आज हमारा है- हमारे हाथों में आबद्ध है.

इस प्रकार गीता हमें युद्ध का; भीषण, घोर संग्राम का, और जहां-जहां अधर्म हो, वहां उसके सामने डटकर प्रतिकार करने का उपदेश देती है. धर्म का संस्थापन करने और अधर्म की जड़ उखाड़ने को ईश्वर स्वतः बार-बार मानव रूप में अवतरित होते हैं. ऐसी ही विजय प्राप्त करने के लिए जगत के अर्जुनों को ईश्वर-पद तक चढ़ना होता है.

(कुलपति के. एम. मुनशी भारतीय विद्या भवन के संस्थापक थे)

साभार: नवनीत हिन्दी डाइजेस्ट, अगस्त 2012

कम्प्यूटर और हम।....

आज से 50 साल पहले हम में से बहुत से लोग नहीं जानते थे की हम इस तरह कम्प्यूटर के कीबोर्ड पर टाइप करके हिन्दी में एक सम्पादकीय लिख सकेंगे या आप अपने कम्प्यूटर के स्क्रीन पर नवनीत का यह सम्पादकीय व्यंग पढ़ सकेंगे।

मानिये या ना मानिये कम्प्यूटर आज हमारी ज़िंदगी का एक अटूट हिस्सा हो गया है। हम सोते से जागते हैं तो सवेरे सवेरे हमारा संपर्क अलार्म महोदय से होता है। अलार्म चाहे फ़ोन का हो या घड़ी का आजकल कम्प्यूटर टेक्नॉलोजी से प्रभावित है। किचन में जायें तो कम्प्यूटर, कार ड्राइव करें तो कम्प्यूटर, ट्रेन में बैठें तो कम्प्यूटर, ऑफिस में काम करें तो कम्प्यूटर, साईकिल पर कम्प्यूटर और हवाई जहाज़ पर कम्प्यूटर। अब हर जगह विराजमान है यह कम्प्यूटर महाशय।

कम्प्यूटर के अविष्कार ने पिछले कुछ सालों में, एक आम आदमी के जीवन में एक हलचल सी कर दी है। और सच मानिये तो हम सब ही कम्प्यूटर के गुलाम हो गये हैं। जब हमारे पास यह नहीं होता है तो लगता है ज़िंदगी अधूरी है। फ़िल्में तो कम्प्यूटर पर बनती ही हैं अब तो लेखक और कवि भी अपने लेख और कविता छोटे से आईपैड का सहारा लेकर ही सुनाना पसन्द करते हैं नहीं तो उनको पिछड़ी ज़ात का कवि माना जाता है।

यही नहीं कम्प्यूटर की टेक्नॉलोजी में इतनी तेज़ी से परिवर्तन हो रहा है कि यदि आप उसके साथ साथ नहीं चलेंगे तो बहुत पीछे छूट सकते है। इसलिए इन महाशय को इस्तेमाल करने के साथ साथ आप ने इनके साथ साथ दौड़ना भी है। जी हाँ हर चीज़ की रफ़्तार इस कम्प्यूटर ने तेज़ कर दी है। जो काम आप 2 महीने में करते थे वो आज आप 2 मिनट में कर सकते हैं। अगर आपने इसको सीखने में ज़रा भी देर करी या आप इसकी रफ़्तार के साथ साथ आगे नहीं बढ़े तो आपको यह दुनिया भी छोड़ देगी। आपको लगेगा आज तक का सारा किया हुआ काम अब व्यस्त हो गया।

अब यह कम्प्यूटर बच्चे की माँ के पेट से लेकर जीवन की आख़री साँस तक हमारे साथ कहीं न कहीं जुड़ा हुआ है। आप पढ़ाई, काम-काज, नौकरी, व्यवसाय, मरने के बाद की सारी रस्में भी कम्प्यूटर महाशय के द्वारा पूरी कर सकते हैं। चोरी, लूट-पाट, हिंसा भड़काना तो बहुत आसान काम हैं। सभी कुछ इस कम्प्यूटर से आसानी से किया जा रहा है।

हँस के मुझे यह कह लेने दीजिये कि शायद कुछ सालों में आप शादी भी कम्प्यूटर से कर सकेंगे। जी हाँ मेरा मतलब है की पति-पत्नी के पवित्र रिश्ते का काम और आपका व्यवाहिक जीवन बिताना भी यह कम्प्यूटर कर रहा होगा। और शायद वह ऊपर वाला जिस पर हम सब का अटूट विश्वास है कोई आला दर्जे का कम्प्यूटर लिये हम सबका हिसाब कर रहा होगा। छोडिये इस मज़ाक़ को, ज़रा यह भी सोचिये की कैसा था हमारा जीवन जब कम्प्यूटर का आविष्कार ही नहीं हुआ था? क्या हम अधूरे थे उस समय या हम अधूरे होने का प्रयास कर रहे हैं इस समय?

आपसे निवेदन है कि आप अपने विचार इस बारे में हमें ज़रूर भेजें "आप भविष्य में कम्प्यूटर को किस रूप में इस्तेमाल करना चाहेंगे और कब तक इसको साथ साथ रखेंगे?" आपकी प्रतिक्रया का मुझे इंतज़ार रहेगा।

शुभ कामनाओं सहित

अब्बास रज़ा अलवी, संपादक

भारतीय राष्ट्र गान

जन गण मन

अधिनायक जय हे

भारत भाग्यविधाता

पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा

द्राविड़ उत्कल बंगा

विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा

उच्छल जलधि तरंगा

तव शुभ नामे जागे

तव शुभ आशीष मांगे

गाहे तव जयगाथा

जन गण मंगलदायक जय हे

भारत भाग्यविधाता

जय हे, जय हे, जय हे

जय जय जय जय हे!

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
महान विचारों को हर दिशा से हमारे पास आने दो

-ऋग्वेद 1-89-1

विषय-सूची

बात बात में बात बढ़ गई 7
छोटे से कदम से ऊंची छलांग 8
अनुभव 10
आज मुझसे बोल, बादल! 12
नहुष का पतन 12
गहरी दृष्टि 18
लोरी सुना रही है हिंदी जुबां की खुशबू 25
आज़ादी का एक 'पल्लु' 27
हिन्दी उर्दू हैं बहन बहन 28
ऑनलाइन शिक्षा—सबको लाभप्रद 29
ऑस्ट्रेलिया में हिन्दी–शिक्षा सम्बन्धी मेरे अनुभव 36
दोपहर की चाय 41
स्वामी विवेकानन्द के सुविचार 42
सच का सौदा 43
अमर स्पर्श 45
कल रात तारों ने मुझ से पूछा 46
बोधकथा 47
सार्थकता 48

भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया
निर्देशक मंडल

पदाधिकारी:

अध्यक्ष	सुरेन्द्रलाल मेहता
कार्यकारी सचिव	होमी नव्रोजी दस्तूर
प्रधान	शंकर धर
सचिव	श्रीधर कुमार कोंदेपुडी

अन्य निर्देशक:

अब्बास रज़ा अलवी, रोजेन कुलकर्णी, पल्लादम नारायणा सथानागोपाल, कल्पना श्रीराम, जगन्नाथन वीराराघवन, मोक्षा वत्स

अध्यक्ष: गंभीर वत्स

संरक्षक: महामहिम श्रीमती सुजाता सिंह (ऑस्ट्रेलिया में पूर्व भारत उच्चायुक्त), महामहिम प्रहत शुक्ला (ऑस्ट्रेलिया में पूर्व भारत उच्चायुक्त), महामहिम राजेंद्र सिंह राठौड़ (ऑस्ट्रेलिया में पूर्व भारत उच्चायुक्त)

मानद जीवन संरक्षक: महामहिम एम. गणपथी (ऑस्ट्रेलिया में पूर्व भारत कौंसुल जनरल और भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया के संस्थापक)

प्रकाशक व प्रबंध संपादक:
गंभीर वत्स
president@bhavanaustralia.org

संपादक :
अब्बास रज़ा अलवी

भाषा संपादक :
परवीन दहिया

विज्ञापन हेतु:
info@bhavanaustralia.org
Bharatiya Vidya Bhavan Australia
Suite 100 / 515 Kent Street,
Sydney NSW 2000

यह ज़रुरी नहीं है कि नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट में योगदानकर्ताओं के विचार, नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट या संपादक के विचार हों। नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट किसी भी योगदान लेख और प्रस्तुत पत्र को संपादित करने का अधिकार सुरक्षित रखता है। *कॉपीराइट:* प्रस्तुत सभी विज्ञापन और मूल संपादकीय सामग्री भवन ऑस्ट्रेलिया की संपत्ति है और इन्हें कॉपीराइट के मालिक की लिखित अनुमति बिना पुन: पेश नहीं किया जा सकता।

कवर पेज चित्र: अज़ीम अब्बास अल्वी

नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट: Vol. 1 No. 5, ISSN 2200 - 7644

बात बात में बात बढ़ गई

(गुस्सा तत्काल शांत नहीं होता परिणाम भुगतने के बाद शांत होता है)

बात
बात में
बात बढ़ गई
बिना बात की बात,
इसने कुछ ऐसा कह डाला
उसने मारी लात।

लात पड़ी तो इसने उठकर
दिया पेट में घूंसा,
उसने इसके मुंह में
गैंदा फूल तोड़ कर ठूंसा।

होंठ हो गए पीले-पीले
चेहरा हो गया लाल,
नील पड़े दोनों के तन पर
हुई गुलाबी चाल।

लड़े-भिड़े और गिरे-पड़े तो
दब गई सारी घास,
रोते धोते दोनों पहुंचे
टीचर जी के पास।

टीचर जी ने बात सुनी
झट हाथ में थामा रूल—
यही सीखने आते हो क्या
तुम दोनों स्कूल?

लुटे-पिटे दोनों बच्चों की
हो गई और पिटाई,
नहीं शिकायत करनी आगे
बात समझ में आई।

पुन: पिटे वे दोनों बच्चे
चुप-चुप बाहर
निकले,
वे क्या निकले उनके
मन के
गुस्से बाहर निकले।

बाहर आकर हाथ मिलाए
ख़तम हुआ हंगामा,
पहले ने झाड़ी कमीज़
और दूजे ने पाजामा।

—अशोक चक्रधर

अशोक चक्रधर जी का ब्लॉग— *चौं रे चम्पू*

छोटे से कदम से ऊंची छलांग

—चौं रे चम्पू! तोय वो दिन याद ऐ जब इंसान के कदम चन्द्रमा पै पड़े?

—हां चचा, साल-महीना तो पहले से याद था, उन्नीस सौ उन्हत्तर की जुलाई। नील आर्मस्ट्रांग के निधन का समाचार पढ़ा तारीख भी पता चल गई, बाईस। मैं उस दिन अपनी ननिहाल इगलास में था जब धरती की कक्षा से निकल कर नील आर्मस्ट्रांग, एल्ड्रिन और माइकल कॉलिन्स चन्द्रमा की कक्षा में प्रविष्ट हुए। मैं बीएससी की कक्षा से निकल कर बीए की कक्षा में प्रविष्ट होने की जद्दोजहद कर रहा था। टीवी तो था नहीं, रेडियो से कान चिपके रहते थे। आंखों देखा हाल कुछ इस तरह बताया जाता था कि सचमुच दृश्य दिखाई देने लगते थे। नील आर्मस्ट्रांग ने कहा था कि इंसान के एक छोटे से कदम से मानवता ने ऊंची छलांग लगाई है। मैं विज्ञान छोड़ कर कला में छलांग लगाना चाहता था। मेरी छलांग भी कम महत्वपूर्ण नहीं थी। बहरहाल, मुझे तीन तत्वों पर चिंतन करने का मौका मिला।

—अपने तत्वन्नैं बताय दै लल्ला।

—पहला तत्व सौन्दर्य, दूसरा अन्धविश्वास और तीसरा भ्रष्टाचार।

—लल्ला हम बात कहीं की करैं, और तू कहीं और लै जाय उनैं।

—दरसल चचा, मुझे काका हाथरसी जी याद आए। काका उन दिनों धर्मयुग में फुलझड़ियां लिखा करते थे और समकालीन विषयों को समेटते थे। उन्होंने तीन कुंडलियां लिखीं। मैं तुम्हें सुनाता हूं, पहली कुंडली है, 'पहुंच गए जब चांद पर एल्ड्रिन, आर्मस्ट्रांग, शायर कवियों की हुई काव्य-कल्पना रौंग। काव्य-कल्पना रौंग,' सुधाकर हमने जाने, कंकड़-पत्थर मिले, दूर के ढोल सुहाने। कहं काका कविराय, खबर यह जिस दिन आई, सभी चन्द्रमुखियों पर घोर निराशा छाई। चन्द्रमा पर उतरना किसी मनुष्य का, ये कल्पनातीत था और वे कवि जो कल्पनाओं में खोए रहते थे, उनकी कल्पनाओं पर कुठाराघात हुआ। सुन्दरियां चन्द्रमुखी कहलाती आई हैं, नील आर्मस्ट्रांग कंकड़-पत्थर बटोर लाए थे, तो काका चूके नहीं। कवियों की सौन्दर्य दृष्टि में बदलाव आना चाहिए पर आया कहां, आज भी चन्द्रमा सौन्दर्य का प्रतीक बना हुआ है। धरती पर आबादी इतनी बढ़ जाए कि चन्द्रमा पर कॉलोनी कटें, और यहां से अमीर लोग छंटें, तो बात दूसरी है। इस तरह पहला तत्व हुआ सौन्दर्य।

—अच्छा दूसरौ बता!

—दूसरा अन्धविश्वास! चन्द्रमा से जुड़े हुए जितने भी अंधविश्वास थे उन पर काका ने प्रहार किए। मुझे उस समय की उनकी एक कुंडली याद है जिस समय उन्होंने अपोलो के उतरने पर लिखा था, पार्वती कहने लगीं, सुनिए भोलेनाथ, अब अच्छा लगता नहीं चन्द्र आपके माथ। चन्द्र आपके माथ,

दया हमको आती है, बुद्धि आपकी तभी ठस्स होती जाती है। धन्य अपोलो! तुमने पोल खोल कर धर दी, काकीजी ने करवाचौथ कैंसिल कर दी। जिस चन्द्रमा को देखकर गृहणियां करवाचौथ का व्रत खोलती थीं, आज भी खोल रही हैं, लेकिन व्यावहारिकता में प्रगतिशील चिंतन के पुरोधा काका ने काकी के माध्यम से करवाचौथ पर प्रहार किया। अंधविश्वासों और जड़ कर्मकांड पर हास्य के ज़रिए प्रहार किया। मेरे मस्तिष्क में ये भावात्मक साहचर्य मंडरा रहे हैं चचा! कोई भी चीज़ किसी भी चीज़ से जुड़ जाती है। अब नील आर्मस्ट्रांग से चन्द्रमा जुड़ गया, चन्द्रमा से काका जुड़ गए, काका से कुंडलियां जुड़ गईं।

—अब तीसरौ तत्व बता!

—तीसरा भ्रष्टाचार! काका वहां भी नहीं चूके। उन्होंने लिखा, 'चन्दामल से कह रहे ठाकुर आलमगीर, पहुंच गए वे चांद पर, मार लिया क्या तीर! मार लिया क्या तीर, लौट पृथ्वी पर आए, हुए करोड़ों खर्च, कंकड़ी-मिट्टी लाए। इनसे लाख गुना अच्छा, नेता का धन्दा, बिना चांद पर चढ़े, हजम कर जाता चन्दा।' मैं सिर्फ़ ये कहना चाहता हूं चचा कि बड़ी-बड़ी घटनाएं होती हैं।

निश्चित रूप से नील आर्मस्ट्रांग याद किए जाएंगे, लेकिन इन स्ट्रांग पंक्तियों को भी याद किया जाना चाहिए, जो चन्द्रयात्री या चन्द्रमा के बहाने आज भी आज के यथार्थ को रेखांकित कर रही हैं। कल्पनाओं में बसे बहुत दूर के यथार्थ पर जाने से पहले निकट के विकट यथार्थ की धरती पर तो चरण रखें। विज्ञान का मिजाज़ प्रकृति से लड़ने का है और कलाओं का प्रकृति से जुड़ने का। मैं परम प्रसन्न हुआ जब विज्ञान से कला-क्षेत्र में आ गया। छोटे से क़दम से लगाई ऊंची छलांग।

—अशोक चक्रधर, उपाध्यक्ष, हिन्दी अकादमी, दिल्ली सरकार एवं उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिन्दी शिक्षण मंडल (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, यूट्यूब पर 'केन्द्रीय हिन्दी संस्थान ' के बाए में इस लिंक पर जाएं
http://www.youtube.com/watch?v=BlK4lk_XiJM

अनुभव

देवीजी ने जैसे पहेली बूझकर कहा, अच्छा समझ गयी, कुछ खुफियों का झगड़ा होगा। पुलिस ने तुम्हारे प्रिन्सिपल से शिकायत की होगी।

ज्ञान बाबू ने इतनी आसानी से अपनी पहेली का बूझा जाना स्वीकार न किया। बोले, 'पुलिस ने प्रिन्सिपल से नहीं, हाकिम जिला से कहा। उसने प्रिन्सिपल को बुलाकर मुझसे जवाब-तलब करने का हुक्म दिया।'

देवी ने अन्दाज से कहा, 'समझ गयी। प्रिन्सिपल ने तुमसे कहा होगा, कि उस स्त्री को घर से निकाल दो।'

'हाँ, यही, समझ लो !'

'तो तुमने क्या जवाब दिया?'

'अभी कोई जवाब नहीं दिया। वहाँ खड़े-खड़े क्या कहता!'

आधी उम्र बीत गयी और बात करना न आया। (पति से) खड़े सोच क्या रहे हो, तुम्हें डर लगता हो; तो मैं जाकर कह आऊँ ?'

देवीजी ने उन्हें आड़े हाथों लिया 'ज़िस प्रश्न का एक ही जवाब हो, उसमें सोच-विचार कैसा?'

ज्ञान बाबू सिटपिटाकर बोले, 'लेकिन कुछ सोचना तो जरूरी था।'

देवीजी की त्योरियाँ बदल गयीं। आज मैंने पहली बार उनका यह रूप देखा! बोलीं, 'तुम उस प्रिन्सिपल से जाकर कह दो, मैं उसे किसी तरह नहीं छोड़ सकता और न माने, तो इस्तीफा दे दो। अभी जाओ। लौटकर हाथ-मुँह धोना।'

मैंने रोकर कहा, 'बहन मेरे लिए...'

देवी ने डाँट बतायी, 'तू चुप रह, नहीं कान पकड़ लूँगी। तू क्यों बीच में कूदती है ! रहेंगे, तो साथ रहेंगे। मरेंगे तो साथ मरेंगे। इस मर्दुए को मैं क्या कहूँ ? आधी उम्र बीत गयी और बात करना न आया। (पति से) खड़े सोच क्या रहे हो, तुम्हें डर लगता हो; तो मैं जाकर कह आऊँ ?'

ज्ञान बाबू ने खिसियाकर कहा, 'तो कल कह दूँगा, इस वक्त कहाँ होगा, कौन जाने।'

रात-भर मुझे नींद नहीं आयी। बाप और ससुर जिसका मुँह नहीं देखना चाहते, उसका यह आदर ! राह की भिखारिन का यह सम्मान। देवी, तू सचमुच देवी है।

दूसरे दिन ज्ञान बाबू चले तो देवी ने फिर कहा, 'फ़ैसला करके घर आना। यह न हो कि फिर सोचकर जवाब देने की जरूरत पड़े।'

ज्ञान बाबू के चले जाने के बाद मैंने कहा, 'तुम मेरे

साथ बड़ा अन्याय कर रही हो बहनजी। मैं यह कभी नहीं देख सकती कि मेरे कारण तुम्हें यह विपत्ति झेलनी पड़े।'

देवी ने हास्य-भाव से कहा, 'क़ह चुकी या कुछ और कहना है।'

'कह चुकी; मगर अभी बहुत कुछ कहूँगी !'

'अच्छा बता तेरे प्रियतम क्यों जेल गये ? तो इसीलिए कि स्वयंसेवकों का सत्कार किया था। स्वयंसेवक कौन हैं ? यह हमारी सेना के वीर हैं, जो हमारी लड़ाइयाँ लड़ रहे हैं। स्वयंसेवकों के भी तो बाल-बच्चे होंगे, माँ-बाप होंगे, वह भी तो कोई कारोबार करते होंगे; पर देश की लड़ाई लड़ने के लिए उन्होंने सब कुछ त्याग दिया है। ऐसे वीरों का सत्कार करने के लिए जो आदमी जेल में डाल दिया जाये, उसकी स्त्री के दर्शनों से भी आत्मा पवित्र होती है। मैं तुझ पर एहसान नहीं कर रही हूँ, तू मुझ पर एहसान कर रही है।'

मैं इस दया-सागर में डुबकियाँ खाने लगी। बोलती क्या। शाम को जब ज्ञान बाबू लौटे, तो उनके मुख पर विजय का आनन्द था।

मैं इस दया-सागर में डुबकियाँ खाने लगी। बोलती क्या। शाम को जब ज्ञान बाबू लौटे, तो उनके मुख पर विजय का आनन्द था।

देवी ने पूछा, 'हार कि जीत ?'

ज्ञान बाबू ने अकड़कर कहा, 'जीत ! मैंने इस्तीफा दे दिया तो चक्कर में आ गया। उसी वक्त हाकिम जिला के पास गया। वहाँ न जाने मोटर पर बैठकर दोनों में क्या बातें हुईं। लौटकर मुझसे बोला आप पोलिटिकल जलसों में तो नहीं जाते।'

मैंने कहा, 'क़भी भूलकर भी नहीं।'

'कांग्रेस के मेम्बर तो नहीं हैं?'

मैंने कहा, मेम्बर क्या, मेम्बर का दोस्त भी नहीं।

'कांग्रेस-फंड में चन्दा तो नहीं देते ?'

मैंने कहा, 'कानी कौड़ी भी कभी नहीं देता।'

'तो हमें आपसे कुछ नहीं कहना है। मैं आपका इस्तीफा वापस करता हूँ।'

देवीजी ने मुझे गले लगा लिया। (*समाप्त*)

मुंशी प्रेमचंद (31 जुलाई, 1880 - 8 अक्टूबर, 1936) भारत के उपन्यास सम्राट माने जाते हैं । प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। वे एक सफल लेखक, देशभक्त नागरिक, कुशल वक्ता, ज़िम्मेदार संपादक और संवेदनशील रचनाकार थे। बीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में जब हिन्दी में काम करने की तकनीकी सुविधाएँ नहीं थीं फिर भी इतना काम करने वाला लेखक उनके सिवा कोई दूसरा नहीं हुआ। प्रेमचंद की रचनाओं में तत्कालीन इतिहास बोलता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में जन साधारण की भावनाओं, परिस्थितियों और उनकी समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया। उनकी कृतियाँ भारत के सर्वाधिक विशाल और विस्तृत वर्ग की कृतियाँ हैं। प्रेमचन्द महान साहित्यकार के साथ-साथ एक महान दार्शनिक भी थे। गोदान, ग़बन, कर्मभूमि, कायाकल्प, निर्मला उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

साभार: *http://premchand.kahaani.org*, चित्र: http://www.munsipremchand.iitk.ac.in

आज मुझसे बोल, बादल!

तम भरा तू, तम भरा मैं,
ग़म भरा तू, ग़म भरा मैं,
आज तू अपने हृदय से हृदय मेरा तोल, बादल
आज मुझसे बोल, बादल!

आग तुझमें, आग मुझमें,
राग तुझमें, राग मुझमें,
आ मिलें हम आज अपने द्वार उर के खोल, बादल
आज मुझसे बोल, बादल!

भेद यह मत देख दो पल-
क्षार जल मैं, तू मधुर जल,
व्यर्थ मेरे अश्रु, तेरी बूंद है अनमोल, बादल
आज मुझसे बोल, बादल!

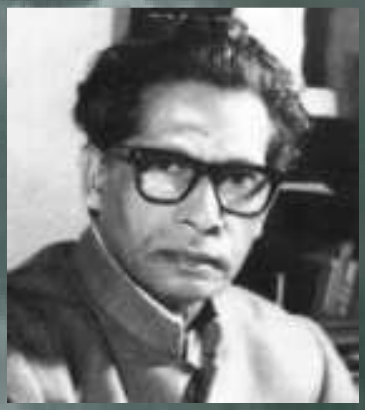

हरिवंश राय बच्चन (27 नवंबर, 1907 - 18 जनवरी, 2003) हिन्दी भाषा के प्रसिद्ध कवि और लेखक थे। उनकी कविताओं की लोकप्रियता का प्रधान कारण उसकी सहजता और संवेदनशील सरलता है । 'मधुबाला', 'मधुशाला' और 'मधुकलश' उनके प्रमुख संग्रह हैं । हरिवंश राय बच्चन को 'साहित्य अकादमी पुरस्कार', सरस्वती सम्मान एवं भारत सरकार द्वारा सन् 1976 में साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। *साभार:* कविता कोश, http://www.kavitakosh.org, चित्र: http://gadyakosh.org

नहुष का पतन

मत्त-सा नहुष चला बैठ ऋषियान में
व्याकुल से देव चले साथ में, विमान में
पिछड़े तो वाहक विशेषता से भार की
अरोही अधीर हुआ प्रेरणा से मार की

दिखता है मुझे तो कठिन मार्ग कटना
अगर ये बढ़ना है तो कहूँ मैं किसे हटना?
बस क्या यही है बस बैठ विधियाँ गढ़ो?
अश्व से अडो ना अरे, कुछ तो बढ़ो, कुछ तो बढ़ो

बार बार कन्धे फेरने को ऋषि अटके
आतुर हो राजा ने सरौष पैर पटके
क्षिप्त पद हाय! एक ऋषि को जा लगा
सातों ऋषियों में महा क्षोभानल आ जगा

भार बहे, बातें सुने, लातें भी सहे क्या हम
तु ही कह क्रूर, मौन अब भी रहें क्या हम
पैर था या सांप यह, डस गया संग ही
पमर पतित हो तु होकर भुंजग ही

राजा हतेज हुआ शाप सुनते ही काँप
मानो डस गया हो उसे जैसे पिना साँप
श्वास टुटने-सी मुख-मुद्रा हुई विकला
“हा ! ये हुआ क्या?” यही व्यग्र वाक्य निकला

जड़-सा सचिन्त वह नीचा सर करके
पालकी का नाल डूबते का तृण धरके
शून्य-पट-चित्र धुलता हुआ सा दृष्टि से
देखा फिर उसने समक्ष शून्य दृष्टि से

दीख पड़ा उसको न जाने क्या समीप सा
चौंका एक साथ वह बुझता प्रदीप-सा -
“संकट तो संकट, परन्तु यह भय क्या ?
दूसरा सृजन नहीं मेरा एक लय क्या ?”

सँभला अद्मय मानी वह खींचकर ढीले अंग -
“कुछ नहीं स्वप्न था सो हो गया भला ही भंग
कठिन कठोर सत्य तो भी शिरोधार्य है
शांत हो महर्षि मुझे, सांप अंगीकार्य है"

दुख में भी राजा मुस्कराया पूर्व दर्प से
मानते हो तुम अपने को डसा सर्प से
होते ही परन्तु पद स्पर्श भूल चूक से
मैं भी क्या डसा नहीं गया हुँ दन्डशूक से

मानता हूँ भूल हुई, खेद मुझे इसका
सौंपे वही कार्य, उसे धार्य हो जो जिसका
स्वर्ग से पतन, किन्तु गोत्रीणी की गोद में
और जिस जोन में जो, सो उसी में मोद में

काल गतिशील मुझे लेके नहीं बेठैगा
किन्तु उस जीवन में विष घुस पैठेगा
फिर भी खोजने का कुछ रास्ता तो उठायेगें
विष में भी अमृत छुपा वे कृति पायेगें

मानता हूँ भूल गया नारद का कहना
दैत्यों से बचाये भोग धाम रहना
आप घुसा असुर हाय मेरे ही हृदय में
मानता हूँ आप लज्जा पाप अविनय में

मानता हूँ आड ही ली मैंने स्वाधिकार की
मूल में तो प्रेरणा थी काम के विकार की

माँगता हूँ आज में शची से भी खुली क्षमा
विधि से बहिर्गता में भी साधवी वह ज्यों रमा

मानता हूँ और सब हार नहीं मानता
अपनी अगाति आज भी मैं जानता
आज मेरा भुकत्योजित हो गया है स्वर्ग भी
लेके दिखा दूँगा कल मैं ही अपवर्ग भी

तन जिसका हो मन और आत्मा मेरा है
चिन्ता नहीं बाहर उजाला या अँधेरा है
चलना मुझे है बस अंत तक चलना

गिरना ही मुख्य नहीं, मुख्य है सँभलना
गिरना क्या उसका उठा ही नहीं जो कभी
मैं ही तो उठा था आप गिरता हूँ जो अभी
फिर भी ऊठूँगा और बढ़के रहुँगा मैं
नर हूँ, पुरुष हूँ, चढ़ के रहुँगा मैं

चाहे जहाँ मेरे उठने के लिये ठौर है
किन्तु लिया भार आज मैंने कुछ और है
उठना मुझे ही नहीं बस एक मात्र रीते हाथ
मेरा देवता भी और ऊंचा उठे मेरे साथ

मैथिली शरण गुप्त (1886 - 1964) का जन्म उत्तर प्रदेश के झाँसी जिला में चिरगाँव ग्राम में हुआ था। इनकी शिक्षा घर पर ही हुई और वहीं इन्होंने संस्कृत, बंगला, मराठी ओर हिंदी सीखी। उनकी रचना "जयद्रथ वध" (1910), "भारत भारती" (1912), पंचवटी, नहुष, मेघनाद वध आदि हिंदी साहित्य के अमुल्य रतन समझे जाते हैं। महाकाव्य "साकेत" (1932) के लिये उन्हे मंगला प्रसाद पारितोषिक प्रदान किया गया। भारत सरकार द्वारा उनको पद्म भूषण से अलंकृत किया गया। इनके रचनाओं में देशभक्ति, बंधुत्व, गांधीवाद, मानवता तथा नारी के प्रति करुणा और सहानुभूति व्यक्त की गई है। इनके काव्य का मुख्य स्वर राष्ट्र-प्रेम है। वे भारतीय संस्कृति के गायक थे। इन्ही कारण से उन्हे राष्ट्रकवि का सम्मान दिया गया है। स्वतंत्रता संग्राम के लिये उन्हे एकाधिक बार जेल भी जाना पड़ा।

साभार : *http://hi.bharatdiscovery.or*, चित्र : www.indianetzone.com

अनमोल वचन

- हमें वह परिवर्तन खुद बनना चाहिये जिसे हम संसार मे देखना चाहते हैं। ~ महात्मा गांधी

- प्रजा के सुख में ही राजा का सुख और प्रजा के हित में ही राजा को अपना हित समझना चाहिये। आत्मप्रियता में राजा का हित नहीं है, प्रजा की प्रियता में ही राजा का हित है। ~ चाणक्य

- लोकतन्त्र, जनता की, जनता द्वारा, जनता के लिये सरकार होती है। ~ अब्राहम लिंकन

संत कबीरदास दोहावली

जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान॥

जहाँ दया तहाँ धर्म है, जहाँ लोभ तहाँ पाप।
जहाँ क्रोध तहाँ पाप है, जहाँ क्षमा तहाँ आप॥

धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय॥

कबीरा ते नर अन्ध है, गुरु को कहते और।
हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रुठे नहीं ठौर॥

पाँच पहर धन्धे गया, तीन पहर गया सोय।
एक पहर हरि नाम बिन, मुक्ति कैसे होय॥

कबीरा सोया क्या करे, उठि न भजे भगवान।
जम जब घर ले जायेंगे, पड़ी रहेगी म्यान॥

शीलवन्त सबसे बड़ा, सब रतनन की खान।
तीन लोक की सम्पदा, रही शील में आन॥

माया मरी न मन मरा, मर-मर गए शरीर।
आशा तृष्णा न मरी, कह गए दास कबीर॥

माटी कहे कुम्हार से, तु क्या रौंदे मोय।
एक दिन ऐसा आएगा, मैं रौंदूंगी तोय॥

कबीर (1398-1518) कबीरदास, कबीर साहब एवं संत कबीर जैसे रूपों में प्रसिद्ध मध्यकालीन भारत के स्वाधीनचेता महापुरुष थे। इनका परिचय, प्राय: इनके जीवनकाल से ही, इन्हें सफल साधक, भक्त कवि, मतप्रवर्तक अथवा समाज सुधारक मानकर दिया जाता रहा है तथा इनके नाम पर कबीरपंथ नामक संप्रदाय भी प्रचलित है। संत कबीर दास हिंदी साहित्य के भक्ति काल के इकलौते ऐसे कवि हैं, जो आजीवन समाज और लोगों के बीच व्याप्त आडंबरों पर कुठाराघात करते रहे। कबीरदास ने हिन्दू-मुसलमान का भेद मिटा कर हिन्दू-भक्तों तथा मुसलमान फ़कीरों का सत्संग किया। तीन भागों; रमैनी, सबद और साखी में विस्तृत कबीर की वाणी का संग्रह 'बीजक' के नाम से प्रसिद्ध है।

साभार: *www.hindisahityadarpan.in, http://www.kavitakosh.org,* चित्र : *www.hindu-blog.com*

अश्रु यह पानी नहीं है

अश्रु

शुभ्र

यह पानी नहीं है, यह व्यथा चंदन नहीं है!

यह न समझो देव पूजा के सजीले उपकरण ये,
यह न मानो अमरता से माँगने आए शरण ये,
स्वाति को खोजा नहीं है और न सीपी को पुकारा,
मेघ से माँगा न जल, इनको न भाया सिंधु खारा!
मानस से छलक आए तरल ये ज्वाल मोती,
प्राण की निधियाँ अमोलक बेचने का धन नहीं है।

अश्रु यह पानी नहीं है, यह व्यथा चंदन नहीं है!

नमन सागर को नमन विषपान की उज्ज्वल कथा को,
देव-दानव पर नहीं समझे कभी मानव प्रथा को,
कब कहा इसने कि इसका गरल कोई अन्य पी ले,
अन्य का विष माँग कहता हे स्वजन तू और जी ले!
यह स्वयं जलता रहा देने अथक आलोक सब को,
मनुज की छवि देखने को मृत्यु क्या दर्पण नहीं है।

अश्रु यह पानी नहीं है, यह व्यथा चंदन नहीं है!

शंख कब फूँका शलभ ने फूल झर जाते अबोले,
मौन जलता दीप, धरती ने कभी क्या दान तोले?
खो रहे उच्छ्वास भी कब मर्म गाथा खोलते हैं,
साँस के दो तार ये झंकार के बिन बोलते हैं,
पढ़ सभी पाए जिसे वह वर्ण-अक्षरहीन भाषा,
प्राणदानी के लिए वाणी यहाँ बंधन नहीं है।

अश्रु यह पानी नहीं है, यह व्यथा चंदन नहीं है !

किरण सुख की उतरती घिरतीं नहीं दुख की घटाएँ,
तिमिर लहराता न बिखरी इंद्रधनुषों की छटाएँ
समय ठहरा है शिला-सा क्षण कहाँ उसमें समाते,
निष्पलक लोचन जहाँ सपने कभी आते न जाते,
वह तुम्हारा स्वर्ग अब मेरे लिए परदेश ही है।
क्या वहाँ मेरा पहुँचना आज निर्वासन नहीं है ?

अश्रु यह पानी नहीं है, यह व्यथा चंदन नहीं है !

आँसुओं के मौन में बोलो तभी मानूँ तुम्हें मैं,
खिल उठे मुस्कान में परिचय, तभी जानूँ तुम्हें मैं,

साँस में आहट मिले तब आज पहचानूँ तुम्हें मैं,
वेदना यह झेल लो तब आज सम्मानूँ तुम्हें मैं !
आज मंदिर के मुखर घड़ियाल घंटों में न बोलो,
अब चुनौती है पुजारी, ये नमन वंदन नहीं है।

अश्रु यह पानी नहीं है, यह व्यथा चंदन नहीं है!

महादेवी वर्मा विरहपूर्ण गीतों की गायिका, आधुनिक युग की मीरा कही जाती हैं। "पद्मश्री" एवं "भारतीय ज्ञानपीठ" की उपाधि से सम्मानित महादेवी वर्मा वेदनाभाव की कवियित्री हैं। इनके काव्य का आधार वास्तव में प्रेमात्मक रहस्यवाद ही है। महादेवी वर्मा ने अपने अज्ञात प्रियतम को स्वरूपितकर, उससे अपना सम्बन्ध जोड़ा और अपने रहस्यवाद की अभिव्यंजना को चित्रात्मक भाषा में व्यक्त किया। उनके काव्य में शुद्ध छायावादी प्रकृति-दर्शन मिलता है। नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा और यामा इनकी प्रसिद्ध काव्य कृतियाँ हैं। साभार: www.http://hi.bharatdiscovery.org चित्र : http://kv1madurailibrary.wordpress.com

गहरी दृष्टि

सरसरी निगाह से दुनिया को देखने पर इसमें कोई खास विशेषता नहीं मालूम पड़ती और सब काम यों ही साधारण रीति से चलते प्रतीत होते हैं, परंतु यदि गहरी दृष्टि से देखा जाए तो हर एक घटना हमें कुछ शिक्षा दे सकती है। महर्षि दत्तात्रेय ने कुत्ते, बिल्ली, मक्खी, मकड़ी तथा चील-कौओं तक से शिक्षा ग्रहण की और उन्हें अपना गुरु बनाया। सैकड़ों मुर्दे निकलते हुए हम देखते हैं, पर कोई विशेष असर नहीं होता, किंतु गौतम बुद्ध पर एक मुर्दे ने बहुत असर डाला, वे सोचने लगे कि मेरा भी यही होना है। इस साधारण दृश्य से उनके मन पर बहुत गहरा असर पड़ा, यहाँ तक कि उनकी जीवन-दिशा ही बदल गई और राज-पाठ छोड़कर संन्यासी हो गये। देखने का उद्देश्य आध्यात्मिक, सेवा-भाव, शिक्षा प्राप्त करना, स्वार्थ साधन, चोरी आदि चाहे जो भी है, यदि बारीक दृष्टि से सांसारिक दृश्यों का निरीक्षण किया जाय तो पग-पग पर अपने काम की बहुत सामग्री मिल सकती है। बूँद-बूँद से घड़ा भरने की बात तो प्रसिद्ध ही है। आप दैनिक जीवन में जो कार्य करते हैं, रोज-रोज अपने आसपास जो घटनाएँ घटित होती है, उन पर शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से बारीक नजर डाला करें, तो प्रकृति की इस पाठशाला में बुद्धिमान् बनने योग्य बहुत सामग्री प्राप्त कर सकते हैं।

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य,
बुद्धि बढाने की वैज्ञानिक विधि - पृ. 22

पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (20 सितम्बर 1911 - 2 जून 1990) भारत के एक युगदृष्टा मनीषी थे जिन्होने अखिल भारतीय गायत्री परिवार की स्थापना की। उन्होंने अपना सारा जीवन समाज की भलाई तथा सांस्कृतिक व चारित्रिक उत्थान के लिये समर्पित कर दिया। उन्होंने आधुनिक व प्राचीन विज्ञान व धर्म का समन्वय करके आध्यात्मिक नवचेतना को जगाने का कार्य किया ताकि वर्तमान समय की चुनौतियों का सामना किया जा सके। उनका व्यक्तित्व एक साधु पुरुष, आध्यात्म विज्ञानी, योगी, दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, लेखक, सुधारक, मनीषी व दृष्टा का समन्वित रूप था।
साभार: http://www.rishichintan.org

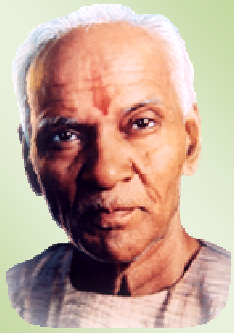

ताजमहल

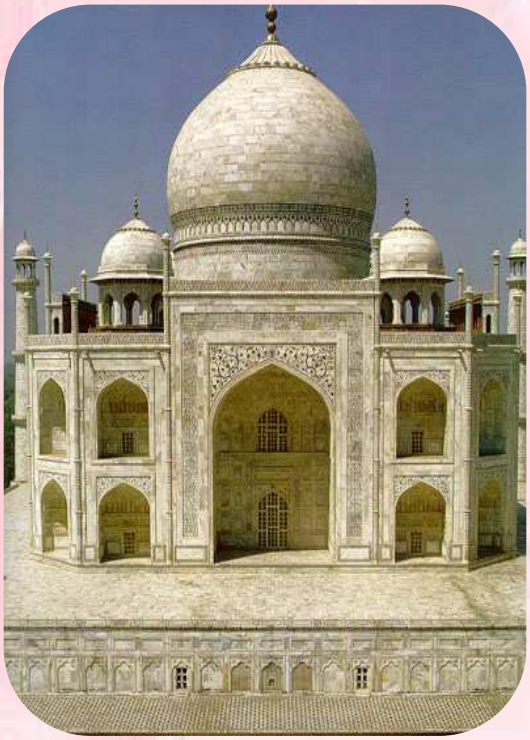

पूर्णिमा की रात में हमने
शाहजहाँ के प्यार में लिपटे
जमना तट पर ताज को देखा
महलों के सरताज को देखा

इंद्र धनुष के सब रंगों ने
या तारों ने उजले पन का
घुल मिल कर यह रूप लिया है
धरती को उपहार दिया है

या फिर कलियों की महारानी
या फिर एक कवि के मन में
चादर ओढ़े सोई पड़ी है
कविता की तस्वीर जड़ी है

पार्वती की अभिलाषा है
या फिर चाँद खिलौना अपना
या शँकर का महल खड़ा है
इस धरती पर भूल गया है

या फिर कोई मुग़ल शहजादी
या फिर पृथ्वी के सृष्टा ने
छोड़ गयी है दर्पण अपना
देखा है धरती का सपना

ऐसा भी महसूस हुआ था
चाँद की किरणों की गर्मी से
ओस पड़ी तो ढह जायेगा
पानी होकर बह जायेगा

हिम की यह कोमल सी गुड़िया
सुन्दरता की अद्भुत मूरत
हाथ लगा तो ढल जाएगी
पौ फटने से जल जाएगी

सिडनी वासी विख्यात उर्दू कवि ओम कृष्ण राहत ने केवल 13 साल की उम्र में उर्दू कविता का पहला संकलन प्रकाशित किया गया था। वह उर्दू, हिन्दी और पंजाबी में कविता, लघु कहानी और नाटक लिखते हैं। राजेंद्र सिंह बेदी, ख्वाजा अहमद अब्बास पुरस्कार और ऑस्ट्रेलिया की उर्दू सोसायटी निशान-ए-उर्दू के अलावा उन्हें उत्तर प्रदेश, हरियाणा और पंजाब और पश्चिम बंगाल की उर्दू अकादमियों द्वारा भी सम्मानित किया जा चुका है। उपरोक्त कृति, *ताजमहल*, कवि ओम कृष्ण राहत द्वारा सन 2007 में पर्काशित काव्य संग्रह, *दो कदम आगे*, में से संकलित की गयी है

श्री गुरु ग्रंथ साहिब

॥ जपु ॥

थापिआ न जाइ कीता न होइ ॥

आपे आपि निरंजनु सोइ ॥
जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ॥
नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥

गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥

दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥
गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई ॥

गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥
जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ॥

गुरा इक देहि बुझाई ॥
सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥

तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ॥
जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ॥

मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥
गुरा इक देहि बुझाई ॥

सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥
जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥

नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ॥
चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ ॥

जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥
कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥

नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ॥
तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे ॥

सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ ॥
सुणिऐ धरति धवल आकास ॥

सुणिऐ दीप लोअ पाताल ॥
सुणिऐ पोहि न सकै कालु ॥

नानक भगता सदा विगासु ॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥

सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु ॥
सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु ॥

सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ॥
सुणिऐ सासत सिम्रिति वेद ॥

नानक भगता सदा विगासु ॥

साभार: http://www.gurbanifiles.org/

सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥

'प्रवासी'

अधेड़ विस्फारित नेत्रों से सब देख रहा था। वह कभी-कभी बुदबुदाता भी था। फिर ठहर जाता, आते-जाते लोगों को देखता। उसके बेटे राम ने उसे बुलवाया है। वह तो सिडनी आना नहीं चाहता था। भारत के एक क़स्बे का प्राणी। वहां की भीड़ का अभ्यस्त।

राम आते ही अपने बापू अवधराम से बोला था—"पैसा मेरे पास बहुत है। जहाँ आना-जाना, घूमना है जाओ। खाओ, पियो, देखो। मैं हमेशा आपके साथ नहीं जा सकता। कारण? नौकरी। हाँ—गुम मत हो जाना। कुछ दिन अवधराम परेशान रहा। पत्नी साथ नहीं आई थी। उसने साफ़ मना कर दिया था।"

'जी—इतनी अंग्रेजी वाला देश। मेरा उधर का मतलब? सुना है वहां के लोग मलेच्छ हैं।' राम माँ से बोला था—'उधर लोग शराब बहुत पीते हैं—सारे गलत काम करते हैं।' पत्नी बोली थी, 'राम के बापू आप ही घूम आओ। क्या समझे?'

वह खड़ा-खड़ा मुस्करा दिया था—इधर का सैर-सपाटा हमारे देश में कहाँ? साफ़-सुथरी सड़कें, हरियाली—लगता है स्वर्ग में आ गए।

यहाँ के लोग बापू की भाषा नहीं समझते। वह बस उनको देखता रहता है। पर बोलते ढंग से हैं। राम प्राय: शाम को उन्हें घुमाता है। कभी-कभी होटल में हिन्दू खाना खिलाता है। और क्या चाहिए?

'प्रवासी' में दो संस्कृतियों का खुला प्रांगण है। इस खुले प्रांगण में भारत तथा ऑस्ट्रेलिया की संस्कृतियों का अवलोकन होता है। किसी भी देश की संस्कृति उस देश की भौगोलिक, जीवन-शैली, संस्कार, दर्शन का अनूठा संगम है। हर एक देश की संस्कृति की अपनी विशेषता है वही उस देश की जीवन-शैली को तिरोहित करती है। कई सन्धर्भों में टकराव की स्थितियाँ भी जन्म लेती हैं। 'प्रवासी' कृति दो विभिन्न संस्कृतियों को आमने-सामने रखती है। उसके बारे में विचार, चिंतन और निष्कर्ष पाठक पर छोड़ दिए गए हैं। रचना में गतिशीलता है, नवीनता है और रोचकता भी।

1 अक्तूबर 1941 को जन्में प्रो. धर्मपाल, पूर्व अध्यक्ष अंग्रेजी विभाग हिंदू कालेज, सोनीपत, हरियाणा, भारत ने उपन्यास, हिंदी तथा अंग्रेजी में छोटी कहानियाँ प्रकाशित की हैं। इन्में उपनिवेश, मुक्ति, राज घाट की ओर, प्रवासी, ठैराव, बस्ती, अवशेष, निर्वस्त्र, रामशर्मण आदि शामिल हैं। उनके उपन्यास, हिंदी कहानियाँ भारतीय रेडियो पर भी प्रसारित हो चुकें हैं। हरियाणा के राज्यपाल के द्वारा दो बार सम्मानित होने के अलावा वे हिंदी राष्ट्रीय शताब्दी सम्मान और पेंगुइन पुरस्कार भी जीत चुकें हैं।

जम और जमाई

बड़ा भयंकर जीव है, इस जग में दामाद
सास-ससुर को चूस कर, कर देता बरबाद
कर देता बर्बाद, आप कुछ पियो न खाओ
मेहनत करो, कमाओ, इसको देते जाओ
कहँ 'काका' कविराय, सासरे पहुँची लाली
भेजो प्रति त्यौहार, मिठाई भर-भर थाली

लल्ला हो इनके यहाँ, देना पड़े दहेज
लल्ली हो अपने यहाँ, तब भी कुछ तो भेज
तब भी कुछ तो भेज, हमारे चाचा मरते
रोने की एक्टिंग दिखा, कुछ लेकर टरते
'काका' स्वर्ग प्रयाण करे, बिटिया की सासू
चलो दक्षिणा देउ और टपकाओ आँसू

जीवन भर देते रहो, भरे न इनका पेट
जब मिल जायें कुँवर जी, तभी करो कुछ भेंट
तभी करो कुछ भेंट, जँवाई घर हो शादी
भेजो लड्डू, कपड़े, बर्तन, सोना-चाँदी
कहँ 'काका', हो अपने यहाँ विवाह किसी का
तब भी इनको देउ, करो मस्तक पर टीका

कितना भी दे दीजिये, तृप्त न हो यह शख़्श
तो फिर यह दामाद है अथवा लैटर बक्स?
अथवा लैटर बक्स, मुसीबत गले लगा ली
नित्य डालते रहो, किंतु ख़ाली का ख़ाली
कहँ 'काका' कवि, ससुर नर्क में सीधा जाता
मृत्यु-समय यदि दर्शन दे जाये जमाता

और अंत में तथ्य यह कैसे जायें भूल
आया हिंदू कोड बिल, इनको ही अनुकूल
इनको ही अनुकूल, मार कानूनी घिस्सा
छीन पिता की संपत्ति से, पुत्री का हिस्सा
'काका' एक समान लगें, जम और जमाई
फिर भी इनसे बचने की कुछ युक्ति न पाई।

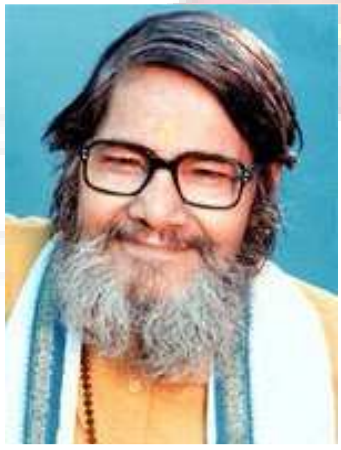

हाथरस में जन्मे काका हाथरसी (वास्तविक नाम: प्रभुलाल गर्ग) हिंदी हास्य कवि थे। काका हाथरसी हिन्दी हास्य व्यंग्य कविताओं के पर्याय माने जाते हैं। वे अपनी हास्य कविताओं को फुलझडियाँ कहा करते थे। भारतीय सरकार द्वारा पद्म श्री से सम्मानित काका हाथरसी का कविता संग्रह इस प्रकार है:- काका के कारतूस, काकादूत, हंसगुल्ले, काका के कहकहे, काका के प्रहसन, काका की फुलझड़ियाँ, लूटनीति मंथन करि, खिलखिलाहट, काका तरंग, जय बोलो बेईमान की, यार सप्तक, काका के व्यंग्य बाण। काका हाथरसी पुरस्कार, इनके नाम से चलाये गये काका हाथरसी पुरस्कार ट्रस्ट, हाथरस द्वारा प्रतिवर्ष एक सर्वश्रेष्ठ हास्य कवि को प्रदान किया जाता है। *साभार:* www.kavitakosh.org

यादें

भूली बिसरी यादें मेरी
कैसे तुझे बताऊँ?
सिर पे आंचल ओढ़ के चुनरी
जब पानी भरने जाऊं
गगरिया ले के सखिया मोरी
खिल खिल हंसी उडायें
तोरे रूप पे मोहित होकर
पेड़ पीछे छुप जायँ!!

कितना सुंदर सपना था वह
कितनी मधुर थी कलियाँ
सुनहली धूप की किरणों में
लिपट रही थी डालियाँ !
भूली बिसरी यादें लेकर
जीवन बन गया है सपना
सब कुछ जैसे लुट चुका है
कोई नहीं है अपना !!

-सुमन

सुमन हिन्दी और अंग्रेजी में कविता लिखती हैं और एक ग्राफिक कलाकार हैं।

लोरी सुना रही है हिंदी जुबां की खुशबू

लोरी सुना रही है हिंदी जुबां की खुशबू
रग-रग से आ रही है हिन्दोस्तां की खुशबू
भारत हमारी माता, भाषा है उसकी ममता
आंचल से उसके आती सारे जहाँ की खुशबू
भाषा अलग-अलग सी, हर प्रांत की है बेशक
है एकता में शामिल हर इक ज़बाँ की खुशबू

भाषाई टहनियों से हर प्राँत के परिंदे
उड़कर जहाँ भी पहुंचे, पहुंची वहां की खुशबू

शायर ने जो चुनी है शेरो-सुख़न की भाषा
आती मिली-जुली सी उसके बयाँ की ख़ुशबू
परदेस में जो आती मिट्टी से सौंधी-सौंधी
ये तो मेरे वतन के है गुलस्ताँ की ख़ुशबू
दीपक जले है हरसू भाषा के आज 'देवी'
लोबान जैसी आती कुछ-कुछ वहाँ की खुशबू।

-देवी नागरानी

11 मई 1941 कराची, पाकिस्तान (तब भारत) में जन्मीं देवी नागरानी न्यू जर्सी, (यू.एस.ए.) में गणित में डिप्लोमा प्राप्त एक सेवानिवृत्त शिक्षिका हैं। उनकी प्रकाशित कृतियों में; "ग़म में भीगी ख़ुशी", "आस की शमा"—सिंधी गज़ल-संग्रह, "उडुर-पखिअरा"—सिंधी-भजन, "सिंध जी आँऊ आई आह्याँ"—सिंधी-काव्य, "चराग़े-दिल", "दिल से दिल तक", "लौ दर्दे-दिल की"—हिंदी ग़ज़ल-संग्रह, "द जर्नी"—अंग्रेजी काव्य-संग्रह, "भजन-महिमा"—हिन्दी भजन संग्रह 2012, "ग़ज़ल"—सिन्धी ग़ज़ल संग्रह 2012 शामिल हैं। कवि-सम्मेलन, मुशायरों में भाग लेने के अलावा उनकी कई कहानियाँ, गज़लें, गीत आदि राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकें हैं। समय समय पर उनका आकाशवाणी मुंबई से हिंदी, सिंधी काव्य, ग़ज़ल पाठ का पर्सारण होता रहता है। इसके अलावा उन्हें; न्यूयार्क में अंतराष्ट्रीय हिंदी समिति, विध्या धाम संस्था, शिक्षायतन संस्था की ओर से 'प्रख्यात कवि', "काव्य रतन", व "काव्य मणि" पुरुस्कार, न्यू जर्सी में मेयर के हाथों "उद्घोषणा पुरस्कार", रायपुर में अंतराष्ट्रीय लघुकथा सम्मेलन में सृजन-श्री आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

प्रणय गीत

गीत प्रणय का अधर सजा दो।
स्निग्ध मधुर प्यार छलका दो।

शीतल अनिल अनल दहकाती,
सोम कौमुदी मन बहकाती,
रति यामिनी बीती जाती,
प्राण प्रणय आ सेज सजा दो।
गीत प्रणय का अधर सजा दो।

गीत प्रणय का अधर सजा दो।

स्निग्ध मधुर प्यार छलका दो।
ताल नलिन छटा बिखराती,
कुंतल लट बिखरी जाती,
गुंजन मधुप विषाद बढाती,
प्रिय वनिता आभास दिला दो।
गीत प्रणय का अधर सजा दो।
गीत प्रणय का अधर सजा दो।
स्निग्ध मधुर प्यार छलका दो।

नंदन कानन कुसुम मधुर गंध,
तारक संग शशि नभ मलंद,
अनुराग मृदुल शिथिल अंग,
रोम रोम मद पान करा दो।
गीत प्रणय का अधर सजा दो।

गीत प्रणय का अधर सजा दो।
स्निग्ध मधुर प्यार छलका दो।

आई. आई. आई. रूडकी (उत्तराँचल) से शिक्षित कवि कुलवंत सिंह काव्य, लेखन व हिंदी सेवाओं के लिए राजभाषा गौरव से सम्मानित किये जा चुके हैं। वे अनेक पत्रिकाएं व रचनाएँ पर्काशित कर चुके हैं। उनमे निम्नलिखित हैं—निकुंज, परमाणु व विकास, शहीद-ए-आजम भगत सिंह, चिरंतन व अन्य रचनाएँ। *कॉपी राईट:* कुलवंत सिंह, विज्ञान प्रशन मंच

आज़ादी का एक 'पल्लु'

आओ नाचें और पल्लु गाएँ
आज़ादी ले ली है हमने, इसकी ख़ुशी मनाएँ
आओ नाचें और पल्लु गाएँ।

वे दिन अब दूर हुए जब ब्राह्मण मालिक कहलाता
जब गोरी चमड़ी वाला कोई बनता था हमारा आका
जब झुकना पड़ता था हमको उन नीचों के आगे
धोखे से गुलाम बनाकर हम पर जो गोली दागे

आओ नाचें और पल्लु गाएँ
आज़ादी ले ली है हमने, इसकी ख़ुशी मनाएँ
आओ नाचें और पल्लु गाएँ।

आज़ादी ली है हमने, बात हमारे हक़ की
अब हम सभी बराबर हैं, यह बात हो गई पक्की
विजयघोष का शंख बजाकर चलो, विश्व को बतलाएँ
आज़ादी ले ली है हमने, इसकी ख़ुशी मनाएँ

आओ नाचें और पल्लु गाएँ
आज़ादी ले ली है हमने, इसकी ख़ुशी मनाएँ
आओ नाचें और पल्लु गाएँ।
बहा पसीना तन का अपने, जो खेतों में मरता
उठा हथौड़ा, कर मज़दूरी, उद्योगों में खटता
उसकी जय-जयकार करेंगे, हम उस पर सब कुछ वारें
जो हराम की खाता है, उसको हम धिक्कारें
नहीं झुकेंगे, नहीं सहेंगे, शोषण को मार भगाएँ

आओ नाचें और पल्लु गाएँ
आज़ादी ले ली है हमने, इसकी ख़ुशी मनाएँ
आओ नाचें और पल्लु गाएँ।

अब यह धरती हमारी ही है, हम ही इसके स्वामी
इस पर काम करेंगे हम सब, हम हैं इसके हामी
अब न दास बनेंगे हम, न दबना, न सहना
जल-थल-नभ का स्वामी है जो, उसके होकर रहना
केवल उसको मानेंगे हम,
उसको ही अपनाएँ

आओ नाचें और पल्लु गाएँ
आज़ादी ले ली है हमने,
इसकी ख़ुशी मनाएँ
आओ नाचें और पल्लु गाएँ।

- सुब्रह्मण्यम भारती

सुब्रह्मण्यम भारती (11 दिसंबर 1882 - 11 सितंबर 1921), तमिलनाडु भारत, में जन्में एक स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक होने के साथ-साथ एक उत्तम श्रेणी के तमिल कवि थे। महाकवि भारती को कई भारतीय भाषाओं में महान अर्थ कवि के रूप में जाना जाता है। भारती गद्य और कविता दोनों रूपों में माहिर थे। भारती तमिल कविता की एक नई शैली शुरू करने में एक अग्रणी थे। उनकी रचनाओं ने जनता रैली करने के लिए दक्षिण भारत में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का समर्थन करने में मदद की। महात्मा गाँधी, बाल गंगाधर तिलक, श्री अरविंदो आदि उनकी समकालीन महान हस्तियाँ थीं।

हिन्दी उर्दू हैं बहन बहन

बस्ती-बस्ती जंगल जंगल
हम साथ चले हैं शांहों से

हिंदी उर्दू को साथ लिये
गुजरे पथरीली राहों से
ऐ तेज हवाओं के झोकों
मत रौंदो नन्हीं कलियों को
हिंदी उर्दू की बगियों में
जो खिलती हैं अरमानों से

- अब्बास रज़ा अलवी

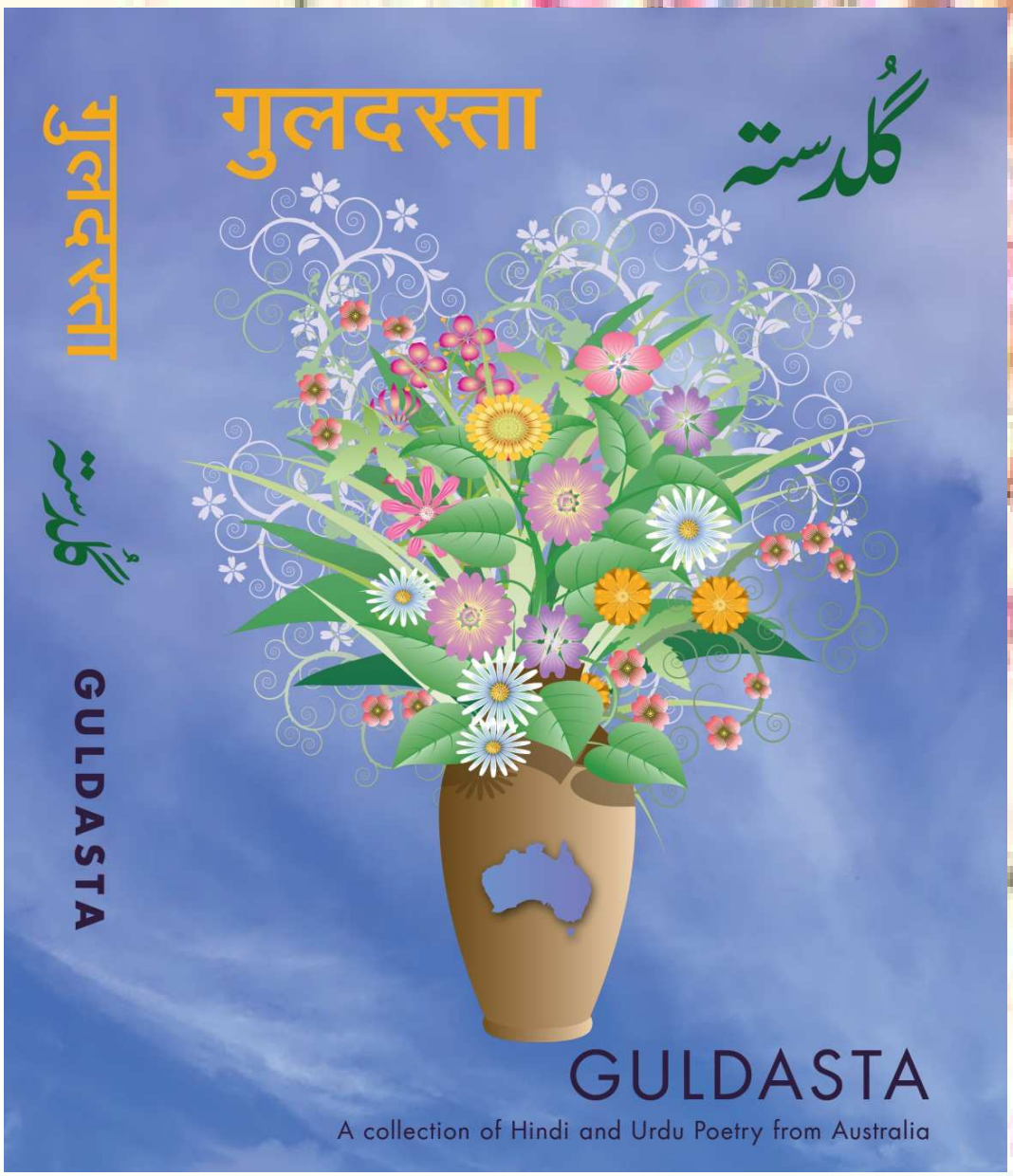

गुलदस्ता हिन्दी और उर्दू मूल ऑस्ट्रेलिया में रहने वाले भारतीय उपमहाद्वीप के पेशेवर और शौकिया कवियों द्वारा कविता का एक संग्रह है। हिन्दी और उर्दू भाषा इतिहास के सच्चे गौरवशाली प्रतिबिंब हैं। यह पुस्तक ऑस्ट्रेलियाई प्रवासियों की भावना को दर्शाती है। कवियों के ऑस्ट्रेलियाई जीवन के अनुभवों और संस्कृति पर इसके प्रभाव को व्यक्त करती हैं। गुलदस्ता हिन्दी (देवनागरी लिपि) और उर्दू (उर्दू लिपि) में प्रकाशित हुई है। यह अनूठी पुस्तक भारतीय विद्या भवन, भवन बुक विश्वविद्यालय, मुंबई, के साथ भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया द्वारा प्रकाशित है। गुलदस्ता एक ऑस्ट्रेलियाई पहल है और ऑस्ट्रेलिया से अद्वितीय काव्य पुस्तक के रूप में बिक्री के लिए दुनिया भर में उपलब्ध है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया,

कक्ष 100, 515 केंट स्ट्रीट, सिडनी 2000

जीपीओ बॉक्स 4018, सिडनी 2001

फोन: 1300 242 826 (1300 भवन), फैक्स: 61 2 9267 9005

ईमेल: info@bhavanaustralia.org

पी. वी. शंकरनकुट्टी द्वारा भारतीय विद्या भवन, के. एम्. मुंशी मार्ग, मुंबई – 400 007 के लिए पर्काशित
तथा सिद्धि प्रिंटर्स, 13/14, भाभा बिल्डिंग, खेतवाडी, 13 लेन, मुंबई – 400 004 में मुद्रित।
ले-आउट एवं डिज़ाइनिंग : समीर पारेख - क्रिएटिव पेज सेटर्स, गोरेगांव, मुंबई – 104, फ़ोन: 98690 08907
संपादक : विश्वनाथ सचदेव

नवनीत अब इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है। **www.navneet.bhavans.info** और साथ ही इन्टरनेट से नवनीत का चंदा भरने के लिए लॉगऑन करें
http://www.bhavans.info/periodical/pay_online.asp
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करे
भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया
कक्ष 100, 515 केंट स्ट्रीट, सिडनी 2000, जीपीओ बॉक्स 4018, सिडनी 2001, फोन: 1300 242 826 (1300 भवन), फैक्स: 61 2 9267 9005,
ईमेल: **info@bhavanaustralia.org**
नवनीत समर्पण गुजराती में भी उपलब्ध

ऑनलाइन शिक्षा—सबको लाभप्रद

शिक्षा के नाम पर बच्चों को हमेशा सताने वाले माँ-बापों का जमाना बीत चुका है। आजकल के माँ-बाप चाहते हैं कि कला और खेल जगत में भी अपनी संतान अग्रणी रहें। बाल-बालिकाएं संगीत, नाट्य, चित्रकला, खेलकूद—सब क्षेत्रों में आगे बढ़ रहे हैं। लेकिन, माँ-बाप के कहीं स्थानांतरित हो जाना जैसी बाधाएं इन्हें घेर लेती हैं।

कंप्यूटर युग के नए द्वार

कलाओं में अभिरुचि होने पर भी प्रशिक्षण केंद्रों से बहुत दूर बसने अथवा शिक्षा, परीक्षा आदि कारणों से भी बच्चे कलाओं से वंचित रह जाते हैं। ये कलाएं सिखाकर, रोजी कमाने वाले गुरु भी विद्यार्थियों के अभाव से दुखी रहते हैं। आज के कंप्यूटर युग ने इन सबके लिए नए द्वार खोल दिए हैं। सूचना प्रौद्योगिकी की सामर्थ्य में वृद्धि, कम दाम पर कंप्यूटर मिलना, इंटरनेट ब्राड-बैण्ड सुविधा उपलब्ध होना आदि के परिणामस्परूप ऑनलाइन गुरु-शिष्य संबंध का बीज बोया गया हैं। यह प्रक्रियायें हैं:

दृश्य एवं श्राव्य पद्धति

शिक्षक और गुरु वेब-साइट खोलकर दुनिया को अपना परिचय देते हैं। वेब-साइट के जरिए शिक्षकों, गुरुओं की जानकारी हासिल करके विद्यार्थी इनसे संपर्क करते हैं और शिक्षण लेते हैं। जो सुदूर रहते हैं, उनके लिए साफ्टवेयर काफी उपयोगी हैं। आडियो और वीडियो रिकार्डिंग तथा एडिटिंग साफ्टवेयर का उपयोग करके शिक्षक और गुरु ई-मेल, चैटिंग व्यवस्थाओं के जरिए दृश्य एवं श्राव्य (आडियो विजुवल) पद्धति में अपने विद्यार्थियों कों शिक्षण देते हैं। फलतः विदेशों में रहने वाले विद्यार्थी भी अपनी अभिरुचि के अनुसार शिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। आनलाइन पाठ्यक्रमों द्वारा गुरुजन भी अपने अस्तित्व को बनाए रखे हुए हैं।

डिजिटल रूप

प्रश्न उठता है कि शंकानिवृत्ति कैसे होगी। ऑनलाइन चाट, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग इसके साधन हैं। ऑनलाइन शिक्षण का इतना विकास हो चुका है कि ऑनलाइन पाठ्यक्रमों का संचालन करके उपाधि करने वाले वर्चुअल विश्वविद्यालय भी स्थापित हो गए हैं। इतना ही नहीं, हमारे देश में ख्याति-प्राप्त खुले विश्वविद्यालय दूरस्थ शिक्षा द्वारा पढ़ने वाले अपने विदेशी छात्रों के लिए इंटरनेट के जरिए डिजिटल रूप में पाठ उपलब्ध करा रहे हैं।

वर्तमान स्थिति

इसी माध्यम से अनेक अध्यापक और शिक्षण संस्थाएँ दृश्य, श्राव्य रूपों में शिक्षण देकर गुरुशिष्य संबंध को सुदृढ बना रही हैं। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, शोध-के क्षेत्रों में ऑनलाइन शिक्षण का महत्व बढ़ गया हैं। वर्तमान स्थिति यह है कि अनेक भारतीय अध्यापक विदेशी छात्रों को गणित, विज्ञान आदि पढाकर पैसे कमा रहे हैं। ऑनलाइन शिक्षण की मांग बढ़ गई हैं। वे अपनी आनलाइन शिक्षण संबंधी वेबसाइट, पाठों के बारे में विज्ञापनों के द्वारा खुद का प्रचार कर रहे हैं।

साभार: http://bhashaindia.com

तुलसी दास के दोहे

नामु राम को कलपतरू कलि कल्यान-निवासु।
जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदासु।।

राम नाम जपि जीहँ जन भए सुकृत सुखसालि।
तुलसी इहाँ जो आलसी गयो आजु की कालि।।

नाम गरीबनिवाज को राज देत जन जानि।
तुलसी मन परिहरत नहिं घुर बिनिआ की बानि।।

कासीं बिधि बसि तनु तजें हठि तनु तजें प्रयाग।
तुलसी जो फल सो सुलभ राम नाम अनुराग।।

मीठो अरू कठवति भरो रौंताई अरू छेम।
स्वारथ परमारथ सुलभ राम नाम के प्रेम।।

राम नाम सुमिरत सुजस भाजन भए कुजाति।
कुतरूक सुरपुर राजमग लहत भुवन बिख्याति।।

स्वारथ सुख सपनेहुँ अगम परमारथ न प्रबेस।
राम नाम सुमिरत मिटहिं तुलसी कठिन कलेस।।

मोर मोर सब कहँ कहिस तू को तू को कहु निज नाम।
कै चुप साधहि सुनि समुझि कै तुलसी जपु राम।।

हम लखि लखहि हमार लखि हम हमार के बीच।
तुलसी अलखहि का लखहि राम नाम जप नीच।।

राम नाम अवलंब बिनु परमारथ की आस।
बरषत बारिद बूँद गहि चाहत चढ़न अकास।।

तुलसी दास (1479–1586) ने हिन्दी भाषी जनता को सर्वाधिक प्रभावित किया। इनका ग्रंथ "रामचरित मानस" धर्मग्रंथ के रूप में मान्य है। तुलसी दास का साहित्य समाज के लिए आलोक स्तंभ का काम करता रहा है। इनकी कविताओं में साहित्य और आदर्श का सुन्दर समन्वय हुआ है। *साभार:* www.anubhuti-hindi.org, चित्र*: www.dlshq.org*

शहीद-ए-आजम भगत सिंह

युगों युगों से गौरव उन्नत,
झुका था अवनत।
समस्या से था ग्रासित,
विकल, दग्ध ज्वाला से त्रासित।

'पुण्य भूमि' जब मलिन हुई थी,
पद के नीचे दलित हुई थी।
'तपोभूमि' संताने व्याकुल,
व्याल घूमते डसने आकुल।

हीरे, पन्ने, मणियां लूटीं,
कलियाँ कितनी रौंदी टूटीं।
आन देश की नोच खसोटी,
कृषक स्वयं न पाये रोटी।

चीर हरण नारी के होते,
भारत निधियां हम थे खोते।
वैभव सारा लुटा देश का,
ध्वस्त हुआ सम्मान देश का।

बाट जोहते सब रहते थे,
हटाओ सब कहते थे।
मचलते,

हिम का आलय
विषम
तिमिर
भाव हृदय में सदा
मौन परंतु सब सहते रहते।

-कवि कुलवंत सिंह, शहीद-ए-आजम भगत सिंह खंड काव्य

उपरोक्त कविता, *शहीद-ए-आजम भगत सिंह*, कवि कुलवंत सिंह द्वारा सन 2010 में पर्काशित खंड काव्य, *शहीद-ए-आजम भगत सिंह*, में से संकलित की गयी है।

अब कै माधव, मोहिं उधारि

अब कै माधव, मोहिं उधारि।
मगन हौं भव अम्बुनिधि में, कृपासिन्धु मुरारि॥

नीर अति गंभीर माया, लोभ लहरि तरंग।
लियें जात अगाध जल में गहे ग्राह अनंग॥

मीन इन्द्रिय अतिहि काटति, मोट अघ सिर भार।
पग न इत उत धरन पावत, उरझि मोह सिवार॥

काम क्रोध समेत तृष्ना, पवन अति झकझोर।
नाहिं चितवत देत तियसुत नाम-नौका ओर॥
थक्यौ बीच बेहाल बिह्वल, सुनहु करुनामूल।
स्याम, भुज गहि काढ़ि डारहु, सूर ब्रज के कूल॥

भावार्थ :- संसार-सागर में माया अगाध जल है, लोभ की लहरें हैं, काम वासना का मगर है, इन्द्रियां मछलियां हैं और इस जीवन के सिर पर पापों की गठरी रखी हुई है। इस समुद्र में मोह सवार है। काम-क्रोधादि की वायु झकझोर रही है। तब एक हरि नाम की नौका ही पार लगा सकती है, पर-स्त्री तथा पुत्र का माया-मोह उधर देखने ही नहीं देता। भगवान ही हाथ पकड़कर पार लगा सकते हैं।

शब्दार्थ :- अब कैं = अबकी बार, इस जन्म में। उधारि = उद्धार करो। मगन = मग्न, डूबा हुआ। भव = संसार। अंबुनिधि = समुद्र। ग्राह = मगर। अनंग = काम वासना। मोट = गठरी। सिवार = शैवाल, पानी के अन्दर उगनेवाली घास जिसमें मनुष्य प्रायः फंस जाता है। कूल = किनारा।

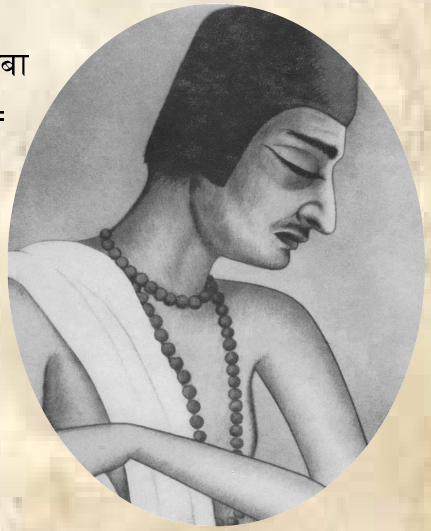

-सूरदास, हिंदी साहित्य में कृष्ण-भक्ति की धारा को प्रवाहित करने वाले भक्त कवियों में महाकवि सूरदास का नाम अग्रणी है। वे भगवान कृष्ण के साथ जुड़े भूमि ब्रज के कवि गायक थे। साहित्य लहरी सूरदास की लिखी रचना मानी जाती है। सूरसागर का मुख्य वर्ण्य विषय श्री कृष्ण की लीलाओं का गान रहा है। सूरसारावली में कवि ने कृष्ण विषयक जिन कथात्मक और सेवापरक पदो का गान किया उन्हीं के सार रूप में उन्होने सारावली की रचना की। *साभार:* www.kavitakosh.org चित्र: *http://bhajansagar.blogspot.com.au*

दिल की चोरी

सुहानी सुबह यह सिड्नी की,
थानेदार पुराने भारत के,
कहानी लुभावनी कालेज वाली,
मानों सर्दियों में ज्वाला भरी शाम हों |

भोली गुड़िया हमारे मन की -
भोली गुड़िया हमारे मन की,
हमारे मन की, कल्पित मन की,
पोथे पुराने भारत के,
फैशन लुभावना यूरोप वाला,
मानों सर्दियों में ज्वाला भरी शाम हों |

जैसे ही थाने में कदम रखा,
सारे जहाँ की नजरें फिसल पड़ीं,
हमउम्र थानेदार स्वागत को लपका,
जैसे आयीजी की बेटी ही यह शाम हों |

महिला कांस्टेबल संग, कानून-वश,
मन के अश्व डोलने लगे,
चोरी की रिपोर्ट जो लिखनी थी,
दिल के रंग उभरने लगे |

संकोच भरी फुसफुसाहट में,
प्रश्नों की उन उलझने लगी –

क्या हुआ
चोरी
किसकी
दिल की
कहाँ
कालेज में,
क्या पहना था,
कितनी उम्र है,
कौन सा है मोबाईल !

- इन सब बातों का क्या लेना देना,
- ये सब कानून की है फाईल |

कानून की फाईल ! आश्चर्य से पूछा |

खीजकर थानेदार कहने लगा,
जाने कहाँ से आ टपकी है यह इस दुनिया में,
कल की छोरी दिलचोर वाली,
फैशन लुभावना यूरोप वाला,
मानों सर्दियों में ज्वाला भरी शाम हों,

कानून है यहाँ इतना लम्बा चौड़ा,
नजरें हैं तीखी हर इंच इंच में,
बड़ी आयी है रिपोर्ट लिखाने,
मानों कागज न् हों कानून का सीना हों,
सोचा है जरा फिर क्या होगा,
कहीं हाथ न् फिसल जायें अंग अंग में |

बाय द् वे तेरा नाम क्या है?

जनता !

सकपकाकर थानेदार पीछे खिसका,
महिला कांस्टेबल को आगे कर दिया,
तनिक प्यार से गुड़िया को बहलाया,
बाकी रिपोर्ट लिखाने तू कल आ जाना |

अबोध आखों में इक् प्रश्न उभरा,
अब इन्हें भला क्या हों गया,
गर्वित कानून का सीना जहाँ इतना चौड़ा,
रिपोर्ट लिखाने कल क्यों आ जाना,
जैसे फाईल की बातें मन बहलाने को,
बस ज्वाला भड़काने वाली काठ हों |

एक अज्ञात प्रतिबिम्ब आकाश में छाया,
साथ निराकार संदेश लाया,
यह रहस्य गुड़िया को बताया,
जनता पर हैं कानून ढेर सारे,
उसी के लिये कानून तक पहुँच नहीं,
कमजोर पक्ष पर हैं नियम सदैव कठोर,
निर्दयी को नियम का महत्त्व नहीं |

डॉ. पवन गुप्ता, सिड्नी, ऑस्ट्रेलिया

ऑस्ट्रेलिया में हिन्दी–शिक्षा सम्बन्धी मेरे अनुभव

भूमिका

आधुनिक ऑस्ट्रेलिया एक बहुसांस्कृतिक समाज है, जहाँ घरों में बोली जानी वाली भाषाओँ की संख्या 400 है। ऑस्ट्रेलिया की सरकार न केवल आप्रवासियों की अपनी भाषा और संस्कृति बनाये रखने की अनुमति देती है बल्कि इस कार्य में उनकी सहायता भी करती है। परन्तु ऐसा सदा नहीं था। सन् 1901 में ऑस्ट्रेलिया की सरकार ने 'श्वेत ऑस्ट्रेलिया' की नीति अपनाई थी। जिस के अनुसार, भारतीयों तथा एशिया, अफ्रीका आदि देशों के व्यक्तियों को ऑस्ट्रेलिया में प्रवासी के रूप में प्रवेश करने पर प्रतिबन्ध था।

इस स्थिति में थोड़ा परिवर्तन, सन् 1947 में भारत के ब्रिटेन से स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद आया जब भारत में पैदा हुए एंग्लोइंडियन तथा अंग्रेजों को ऑस्ट्रेलिया में स्थाई रूप से निवास करने की अनुमति मिली। 1960 के दशक के उत्तरार्ध में भारत से डॉक्टरों, इंजीनियरों, शिक्षकों आदि को ऑस्ट्रेलिया में स्थाई रूप से निवास करने की अनुमति मिली। उसके बाद के वर्षों में कम्प्यूटर विशेषज्ञों तथा अन्य व्यावसायिकों को भारत से ऑस्ट्रेलिया में आने दिया गया। 1980 में ऑस्ट्रेलियाई नियमों में कुछ और परिवर्तन हुए जिन के कारण ऑस्ट्रेलिया में बसे हुए भारतीयों के रिश्तेदारों का ऑस्ट्रेलिया आना अधिक आसान हो गया।

सन् 1996 में ऑस्ट्रेलिया में हिंदी-भाषियों की संख्या 35,000 थी। अगले दस वर्षों में यह संख्या दुगनी हो गई। सन् 2006 में की गई जन गणना के अनुसार ऑस्ट्रेलिया में 70,000 हिंदी-भाषी थे और सन् 2011 में 1,11,351 हो गई। इन आंकड़ों के अनुसार, सन् 2001 और सन् 2006 के बीच हिन्दी-भाषियों की संख्या में 46.4% की और सन् 2006 व सन् 2011 के बीच लगभग 50% की वृद्धि हुई। सन् 2006 में, हिन्दी-भाषियों की संख्या ऑस्ट्रेलिया की सम्पूर्ण जनता का 0.4% थी।

सन् 2006 में यह बढ़ कर 0.5% हो गई। पिछले दस वर्षों में ऑस्ट्रेलिया में हिन्दी-भाषियों की संख्या में लगभग 133% प्रतिशत की वृद्धि हुई है। घर में सब से अधिक बोली जाने वाली भाषाओँ में सन् 2001 में हिन्दी बारहवें स्थान पर; सन् 2006 में दसवें स्थान पर और सन् 2011 में नवें स्थान पर थी। अन्य आठ भाषाएँ, जिन्हें घर में बोलने वालों की संख्या हिन्दी से अधिक है, उनके नाम तथा ऑस्ट्रेलियाई जनसंख्या के कितने प्रतिशत व्यक्ति ये भाषाएँ बोलते हैं, नीचे दिए गये हैं—अंग्रेजी (80.7%), मैंडरिन, (1.7%), इतालवी (1.5%), अरबी (1.4%), कैन्टोनीज़ (1.3%), ग्रीक (1.3%), वियतनामी (1.2%)।

ऑस्ट्रेलिया में भारतीय मूल के लोग कई देशों, उदाहरण के लिए फीजी, दक्षिण अफ्रीका, मारीशस, इंग्लैंड आदि से आये हैं। इसलिए इन सबकी हिंदी भाषा में वे अंतर पाए जाते हैं, जो इन देशों में बसे हिंदी भाषी लोगों की भाषा में देखे जाते हैं।

ऑस्ट्रेलिया में हिंदी शिक्षा

प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर

ऑस्ट्रेलियन सरकार की भाषाई नीति के अनुसार सोमवार से शुक्रवार तक लगने वाले सामान्य स्कूलों में केवल 8 चुनी हुई भाषाओँ; 4 यूरोपियन तथा 4 एशियाई) पढ़ाए जाने का प्रावधान है। इन भाषाओँ का चुनाव ऐतिहासिक तथा आर्थिक कारणों से किया गया है और इन में हिंदी नहीं सम्मिलित है। इसलिए, हिंदी कक्षाएँ अधिकतर सप्ताहांत में लगती है। ये कक्षाएँ कुछ प्रदेशों (उदहारण के लिए विक्टोरिया) प्रादेशिक सरकार के शिक्षा विभाग के अंतर्गत चलती हैं परन्तु अधिकतर, ये कक्षाएँ हिंदी के प्रचार में रूचि रखने वाले व्यक्तियों अथवा संगठनों द्वारा चलायी जाती हैं। निजी रूप से चलायी जाने वाली हिंदी तथा अन्य

सामुदायिक भाषाओँ के विद्यालयों को बहुधा ऑस्ट्रेलिया की केन्द्रीय सरकार से अनुदान मिलता है, जो इन विद्यालयों को चलाने के लिए काफी तो नहीं होता है परन्तु सहायक होता है। केन्द्रीय सरकार की एक योजना के अंतर्गत इन्हें 'सामुदायिक भाषा विद्यालय' (कम्युनिटी लैंग्वेजेज़ स्कूल) का नाम दिया जाता है। ऑस्ट्रेलिया के अधिकांश प्रदेशों में हिंदी इसी प्रकार के विद्यालयों में पढ़ाई जाती है।

माध्यमिक स्तर पर हिंदी शिक्षा में एक बड़ा परिवर्तन तब आया जब विक्टोरिया की सरकार ने सन् 1993 में 11वीं तथा 12वीं कक्षा में हिंदी को हाई स्कूल में मान्यता प्रदान की। बाद में, यह मान्यता ऑस्ट्रेलिया के अन्य प्रदेशों ने भी प्रदान की। परिणामस्वरूप, आज ऑस्ट्रेलिया के अधिकांश प्रदेशों के विद्यार्थी उच्च माध्यमिक स्तर पर हिंदी पढ़ सकते हैं और 12वीं कक्षा की राष्ट्रीय हिंदी परीक्षा में भाग ले सकते हैं।

विक्टोरिया में हिंदी शिक्षा के विकास का इतिहास

जब मैं 1970 के दशक में ऑस्ट्रेलिया आया था, उस समय यहाँ प्राथमिक अथवा माध्यमिक स्तर बच्चों की हिंदी शिक्षा का कोई प्रबंध नहीं था। इसलिए अपने पुत्र तथा पुत्री को हिंदी सिखाने के लिए मैंने उन्हें भारत सरकार के केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली के पत्राचार विभाग द्वारा संचालित पाठ्यक्रमों में प्रवेश दिलवाया। 'हिंदी-प्रवेश' तथा 'हिंदी-परिचय' के दोवर्षीय पाठ्यक्रम आज भी उपलब्ध हैं परन्तु मुझे इन में कुछ कमियाँ लगीं क्योंकि ये पाठ्यक्रम मूल रूप से अहिन्दी भाषी केंद्रीय सरकारी कर्मचारियों के लिए तैयार किये गए थे जिनके लिए अपनी नौकरी बनाये रखने अथवा पदोन्नति के लिए हिंदी जानना आवश्यक था।

ऑस्ट्रेलिया के अधिकांश प्रदेशों में हिंदी इसी प्रकार के विद्यालयों में पढ़ाई जाती है।

इसलिए, कई पाठ्यांशों और व्याकरण के नियमों को समझाने की भाषा वयस्कों के लिए उपयुक्त थी पर बच्चों के लिए अनुपयुक्त थी। इसके अतिरिक्त एक पाठ पर आधारित अभ्यास को पूरा कर के भारत से त्रुटियाँ ठीक कर के वापस लौटने में औसतन एक महीना या उस से अधिक समय लग जाता था। 'हिंदी-प्रवेश' पाठ्यक्रम में प्रवेश करने की न्यूनतम आयु दस वर्ष थी। इसिलए, दस वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए, यह पाठ्यक्रम अनुपयोगी था। 'हिंदी-प्रवेश' अथवा 'हिंदी-परिचय' पाठ्यक्रमों की परीक्षा देने भारतीय उच्चायुक्त अथवा भारतीय वणिज्य दूतावास के कार्यालय में जाना पड़ता था, जो सबके लिए सुविधाजनक नहीं था।

उपरोक्त कारणों से जब मेरे पुत्र तथा पुत्री ने केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के पाठ्यक्रम पूरे कर लिए तो मुझे लगा कि अन्य बच्चों को हिंदी सिखाने के लिए ऑस्ट्रेलिया में ही कुछ प्रबंध होना चहिये।

मैंने ऑस्ट्रेलिया के विक्टोरिया प्रदेश की सरकार के शिक्षा विभाग से संपर्क किया तो पता चला कि शनिवार को "सैटरडे स्कूल ऑफ़ माडर्न लैंग्वेजेज़" जो अब 'विक्टोरियन स्कूल ऑफ़ लैंग्वेजेज़' के नाम से जाना जाता है, में अन्य सामुदायिक भाषाओं को पढ़ाए जाने का प्रबंध है, वहाँ हिंदी पढ़ाए जाने का भी प्रबंध किया जा सकता है। परन्तु, इसके लिए, हिंदी सीखने के इच्छुक बच्चों तथा उनके माता-पिता के नाम तथा पता देने होंगे, विक्टोरिया में हिंदी-भाषी समुदाय की ओर से प्रार्थना-पत्र देना होगा और हिंदी शिक्षक का प्रबंध करना होगा। लगभग तीन वर्षों के प्रयत्न के पश्चात, सन् 1986 में विक्टोरिया में मेल्बर्न के ब्रंज़विक उपनगर में प्राथमिक स्तर पर सबसे पहली हिंदी कक्षाएँ आरंभ हुईं।

इस कक्षा के प्रथम शिक्षक स्वर्गीय डॉ. रमाशंकर पाण्डेय थे और उनकी अनुपस्थिति में उनकी धर्मपत्नी, श्रीमती इंदुमती पाण्डेय, जो स्वयं एक अनुभवी अध्यापिका थीं, इस कक्षा को पढ़ाया करती थीं। विद्यार्थियों की संख्या कम होने के कारण इसके बंद हो जाने का भय हमेशा बना रहता था। विक्टोरिया में हिंदी शिक्षा को अधिक प्रोत्साहन तब मिला जब मेरे साथ काम करने दस वर्षों के प्रयत्न के पश्चात, 1993 में हिंदी को 11वीं तथा 12वीं कक्षाओं में हिंदी के पठन-पाठन को सरकारी मान्यता मिली। अब ऑस्ट्रेलिया के अधिकांश नगरों में विद्यार्थी हाई स्कूल की 11वीं तथा 12वीं कक्षाओं में न केवल हिंदी पढ़ सकते हैं बल्कि 12वीं कक्षा में हिंदी विषय ले कर हाई स्कूल उत्तीर्ण करने पर उन्हें विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए उन्हें बोनस अंक भी प्राप्त होते हैं।

11वीं तथा 12वीं कक्षाओं में हिंदी को सरकारी मान्यता दिलवाने में जिन व्यक्तियों ने मेरी सहायता की, उन में

श्रीमती अन्ना कोवियस, श्रीमती इवाल बायरन, श्रीमती सुधा जोशी, स्वर्गीय डॉ. रमाशंकर पाण्डेय, श्रीमती इन्दुमती पाण्डेय तथा श्रीमती मंजीत ठेठी का योदान प्रमुख था। 1993 में हाई स्कूल स्तर पर हिंदी को सरकारी मान्यता मिलने से ले कर अब तक श्रीमती मंजीत ठेठी 'विक्टोरियन स्कूल ऑफ़ लैंग्वेजेज़' में 11वीं तथा 12वीं कक्षाओं के विद्यार्थियों को हिंदी पढ़ाती रही हैं। बाद में, हिंदी अध्यापन के कार्य में कई शिक्षकों ने अपना योगदान दिया। इन में डॉ. नरेन्द्र अग्रवाल व श्रीमती अनुश्री जैन का योगदान उल्लेखनीय है।

हाई स्कूल स्तर पर हिंदी को सरकारी मान्यता प्राप्त होने के बाद एक प्रमुख समस्या सामने यह आई कि ऑस्ट्रेलिया के पाठ्यक्रम के अनुरूप हिंदी में कोई पुस्तक उपलब्ध नहीं थी। 'नेशनल सेंटर ऑफ़ साऊथ एशियन स्टडीज़' की निदेशिका, श्रीमती मरीका विक्ज़ियानी ने इस सम्बन्ध में सहायता की और हिंदी में पाठ्य पुस्तक तैयार करने के लिए मेल्बर्न के लट्रोब विश्वविद्यालय को अनुदान दिया गया। श्रीमती वर्मा टंडन ने यह पुस्तक लिखी, जिसका शीर्षक था—'ऑस्ट्रेलिया में समकालीन हिंदी'। यह पुस्तक दो भागों में प्रकशित हुई। इस परियोजना के संचालन तथा पुस्तक के संपादन में, श्रीमती सुधा जोशी तथा श्री रिचर्ड डिलेसी ने विशेष सहयोग दिया।

ऑस्ट्रेलिया के विभिन्न शहरों में हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए कई संस्थायें स्थापित हुईं।

पाँच वर्षों पश्चात पाठ्यक्रम में परिवर्तन हुए। परिणामस्वरूप एक नई पाठ्यपुस्तक की आवश्यकता हुई। 'विक्टोरियन स्कूल ऑफ़ लैंग्वेजेज़' के तत्वाधान में दो भागों में 'हिंदी नक्षत्र' नामक एक दूसरी पाठ्य-पुस्तक सन् 2006 और 2007 में प्रकाशित की गई। मेरे साथ इस पुस्तक का संपादन श्रीमती सुधा जोशी ने किया। इस पुस्तक को लिखने में श्री रिचर्ड डिलेसी, डॉ. नरेंद्र अग्रवाल, श्रीमती मंजू अग्रवाल,श्रीमती सुधा अग्रवाल तथा मृदुला कक्कड़ ने सहयोग दिया। इस पुस्तक को तकनीकी रूप से तैयार करने और कम्प्यूटर साज-सज्जा के प्रस्तुतीकरण का उत्तरदायित्व भी श्रीमती मृदुला कक्कड़ ने संभाला।

हिन्दी और राष्ट्रीय पाठ्यक्रम

सन् 2011 में, ऑस्ट्रेलिया की केन्द्रीय सरकार के आदेश पर 'अकारा' (ऑस्ट्रेलियन करीकुलम, एसेसमेन्ट ऐंड सर्टिफिकेशन अथॉरिटी) ने राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के लिये ऑस्ट्रेलियाई स्कूलों में पढ़ाये जाने के लिये भाषाओँ का चयन किया और भाषा-अध्यापन के मुख्य सिद्धांतों का प्रारूप प्रस्तुत किया। इस प्रारूप में एशियाई भाषाओँ के पढ़ाये जाने पर तो ज़ोर दिया गया था; इण्डोनेशियाई, चीनी, जापानी, कोरियाई भाषाओँ का समावेश किया गया था परंतु हिन्दी का कहीं नाम भी नहीं था। इस बात से ऑस्ट्रेलिया के हिन्दी समर्थकों को गहरा धक्का लगा और ऑस्ट्रेलिया के विभिन्न हिन्दी प्रचारक संगठनों ने मिल कर 'अकारा' से निवेदन किया कि विश्व में तीसरी सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा हिन्दी को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए।

इसके लिये एक जन-आन्दोलन चलाया गया और न केवल हिन्दी समर्थक संगठनों ने बल्कि व्यक्तिगत रूप से भी लोगों ने हिन्दी को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने के लिये याचिकाएँ भेजीं। राजनितिक स्तर पर भी प्रादेशिक तथा केन्द्रीय स्तर पर विभिन्न राजनीतिक नेताओं से भेंट की गयीं। अंत में 'अकारा' ने नवम्बर 2011 ने अपने अंतिम प्रारूप में हिन्दी भाषा को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने का निर्णय घोषित किया परंतु यह प्रावधान लगाया कि सबसे पहले चीनी तथा इतालवी भाषाओँ के लिये पाठ्यक्रम तैयार किया जायेगा; बाद में अन्य भाषाओँ की बारी आयेगी।

इस निर्णय से हिन्दी-समर्थकों को बड़ी राहत मिली। हिन्दी को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने की घोषणा के पश्चात शीघ्र ही विक्टोरिया के एक सरकारी प्राथमिक विद्यालय ने न केवल भारतीय बच्चों को बल्कि अपने स्कूल के सभी 350 विद्यार्थियों को, जिन में अधिकतर विद्यार्थियों की मातृ-भाषा अंग्रेजी अथवा अन्य भाषा है, हिन्दी सिखाने का निर्णय लिया। आशा है भविष्य में अन्य विद्यालय भी इस उदाहरण का अनुकरण करेंगे और हिन्दी पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि होगी।

विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी शिक्षा

कैनबरा स्थित 'ऑस्ट्रेलियन नैश्नल यूनिवर्सिटी' में हिंदी काफी समय से पढ़ाई जाती रही है। यहाँ का हिंदी विभाग

प्रोफ़ेसर रिचर्ड मग्रेगर द्वारा स्थापित किया गया था। यहाँ हिंदी विषय स्नातक तथा परास्नातक स्तर पर अध्ययन के लिए उपलब्ध है।

यहाँ 'एशियन स्टडीज़' संकाय के अंतर्गत स्नातक स्तर पर दो पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं—तीन वर्षीय 'बैचलर ऑफ़ एशियन स्टडीज़ (हिंदी)' और चार वर्षीय 'बैचलर ऑफ़ एशियन स्टडीज़ विशेषज्ञ (हिंदी)', जिस में तीसरा वर्ष एक भारतीय विश्वविद्यालय में उच्च स्तर पर हिंदी भाषा का अध्ययन शामिल है। चौथे वर्ष में विद्यार्थी हिंदी के अतिरिक्त भारत के बारे में विशिष्ट अध्यन करते हैं।

इसके अतिरिक्त, मेल्बर्न के 'लट्रोब विश्वविद्यालय' में भी स्नातक स्तर पर हिन्दी पढ़ने की सुविधा उपलब्ध है, जहाँ 'ओपेन युनिवर्सिटी' द्वारा दूर-शिक्षा-प्रणाली द्वारा हिंदी शिक्षा उपलब्ध है।

कई अन्य विश्वविद्यालयों, उदाहरण के लिए सिडनी विश्वविद्यालय तथा मेल्बर्न के चार विश्वविद्यालयों, मेलबर्न, मोनाश, लट्रोब तथा रायल मेल्बर्न इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नालोजी में स्नातक स्तर पर समय-समय पर हिंदी पढ़ाई जाती रही है। खेद की बात है की सिडनी विश्वविद्यालय में, जहाँ हिंदी सन् 2010 में पढ़ाई जा रही थी, वहाँ यह सुविधा अब नहीं उपलब्ध है । अब विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी विषय का अध्ययन केवल कैनबरा की 'ऑस्ट्रेलियन नैश्नल युनिवेर्सिटी' तथा मेल्बर्न के लट्रोब विश्वविद्यालय में उपलब्ध है।

90 के दशक में हिंदी को अच्छा प्रोत्साहन मिला था, जब मेल्बर्न में स्वर्गीय डॉ. रमाशंकर पाण्डेय तथा श्रीमती सुधा जोशी ने विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी के पठन-पाठन में विशेष योगदान दिया। श्रीमती सुधा जोशी आज भी हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं।

वयस्कों के लिए हिंदी शिक्षा

वयस्कों के लिए हिंदी शिक्षा के स्रोत बदलते रहे हैं। 1970 के दशक में, हिंदी 'टेक्निकल ऐंड फर्दर एजुकेशन', (टेफ) के कुछ केन्द्रों में हिंदी शिक्षा का प्रबंध था तथा 1980 के दशक के उत्तरार्ध में 'विक्टोरियन स्कूल ऑफ़ लैंग्वेजेज़' की कक्षाओं में स्कूली बच्चों के साथ-साथ, वयस्क विद्यार्थी भी प्रवेश ले सकते थे।। इसके अतिरिक्त, कुछ विश्वविद्यालय (उदाहरण के लिए, क्वीन्सलैंड विश्वविद्यालय) भी भूतकाल में वयस्कों के लिए हिंदी-शिक्षा प्रदान करते रहे हैं। परन्तु विभिन्न प्रांतों में, वयस्कों के लिए हिंदी-शिक्षा का प्रमुख स्रोत वयस्क शिक्षा एजेंसियाँ, उदहारण के लिए, विक्टोरिया में 'काउंसिल ऑफ़ एडल्ट एजुकेशन' रही हैं। वयस्कों के लिए अधिकांश पाठयक्रम, राबर्ट स्नेल की पुस्तक 'टीच योरसेल्फ़ हिंदी' पर आधारित रहे हैं।

हिंदी प्रचारक संस्थान

1990 के दशक के आरंभिक वर्षों में ऑस्ट्रेलिया के विभिन्न शहरों में हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए कई संस्थायें स्थापित हुईं। उदाहरण के लिए, मेल्बर्न में हिंदी निकेतन तथा सिडनी व पर्थ में हिंदी समाज की स्थापना हुई। इनकी गतिविधियों में काफ़ी समानताएँ थीं। होली, दिवाली आदि भारतीय त्योहारों को मनाना; हिंदी कक्षाओं का प्रबंध करना; सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना अदि। किसी सीमा तक, ये संस्थाएँ आज भी यह कार्य कर रही हैं। मेल्बर्न के हिंदी निकेतन के एक विशेष कार्यक्रम का उल्लेख करना असंगत न होगा।

यह कार्यक्रम है—'वी०सी०ई० समारोह', जिस में हर वर्ष, हिंदी विषय ले कर 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार दे कर सम्मानित किया जाता है। इसी प्रकार पर्थ के हिंदी समाज द्वारा आयोजित 'फुलवारी' कार्यक्रम बच्चों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर प्रदान करता है। ऑस्ट्रेलिया के प्रमुख शहरों में कवि गोष्ठियाँ तथा कवि-सम्मलेन भी इन संस्थाओं द्वारा आयोजित की जाती हैं। मेल्बर्न में शारदा कला केंद्र द्वारा लंबे समय तक, हर दूसरे महीने साहित्य-संध्या तथा संगीत-संध्या आयोजित की जाती रही हैं। पिछले दो वर्षों से साहित्य-संध्या आयोजित करने का काम, ऐच्छिक रूप से एक उत्साही वर्ग ने ले लिया है, जिस का संयोजन डॉ नलिन शारदा तथा हरिहर झा कर रहे हैं।

पिछले कुछ वर्षों से सिडनी में 'भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया' भी भारतीय संस्कृति तथा हिंदी-उर्दू के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। 14 सितम्बर, 2010 को हिंदी-दिवस पर, 'न्यू साऊथ वेल्स' संसद भवन में एक

समारोह में 47 हिंदी-उर्दू के कवियों / शायरों की कृतियाँ 'गुलदस्ता' शीर्षक की पुस्तक का विमोचन तथा इन भाषाओँ तथा भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में योगदान देने वाले व्यक्तियों को सम्मानित कर के एक नया कीर्ति स्तंभ कायम किया है। इसके पहले, जनवरी, 2010 में रेखा राजवंशी द्वारा सम्पादित, ऑस्ट्रेलिया के 11 हिंदी कवियों की कविताओं का संग्रह 'बूमरैंग' किताबमहल द्वारा प्रकाशित किया गया। इस वर्ष, प्रसिद्ध हिन्दी कवि 'अशोक चक्रधर' के ऑस्ट्रेलिया के विभिन्न शहरों में कविता-पाठ ने हिन्दी-प्रेमियों में नया उत्साह जगाया है।

ऑस्ट्रेलिया में हिंदी मीडिया

समाचार-पत्र

ऑस्ट्रेलिया में अंग्रेजी में अनेक भारतीय मासिक समाचार-पत्र निकलते हैं। केवल मेल्बर्न से ही एक दर्जन से अधिक ऐसे समाचार पत्र निकलते हैं। इन में से केवल एक मासिक समाचार-पत्र है, जिस में दो पृष्ठ हिंदी के होते हैं। कुछ अन्य समाचार-पत्रों में अन्य भारतीय भाषाओँ, उदाहरण के लिए तमिल, सिंधी, पंजाबी के भी कुछ पृष्ठ होते हैं। ऑस्ट्रेलिया से 'इंडिया@मेल्बर्न' नामक समाचार-पत्र में अंग्रेजी, गुरुमुखी तथा हिंदी में भी पठन सामग्री होती है। हाल में सिडनी से 'हिंदी गौरव' नामक हिंदी समाचार प्रकाशित होना प्रारंभ हुआ है।

रेडियो

'स्पेशल ब्राडकास्टिंग सर्विस' या संक्षेप में 'एस०बी०एस०' रेडियो राष्ट्रीय स्तर पर प्रति सप्ताह 4 घंटे हिंदी में कार्यक्रम प्रसारित करता है। हाल ही भारत से सीधे आधे घंटे का हिंदी में समाचार का प्रसारण भी आरंभ हुआ है। इसके अतिरिक्त, कई सार्वजनिक तथा निजी रेडियो स्टेशन भी हिंदी कार्यक्रम प्रसारित करते हैं।

हिंदी चलचित्र

'एस०बी०एस०' टेलिविज़न समय-समय पर हिंदी चलचित्र प्रसारित करता रहा है। अब तो हिंदी चलचित्र ऑस्ट्रेलिया के प्रमुख नगरों के सिनेमाघरों में भी देखे जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त, भारतीय दुकानों से हिंदी चलचित्रों के विडियो-कैसेट तथा डी०वी०डी० किराये पर लिए जा सकते हैं या ख़रीदे जा सकते हैं। पिछले कुछ वर्षों से भारत के टेलिविज़न चैनलों, उदहारण के लिए, ज़ी, स्टार, टाइम्स अदि चैनलों द्वारा भी हिंदी कार्यक्रमों का प्रसारण उपलब्ध है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

कई स्थानीय संस्थाएँ हिंदी साहित्य,संगीत तथा नृत्य के कार्यक्रम आयोजित करती हैं और भारत से भी कलाकारों को आमंत्रित करती हैं। इसके अतिरिक्त, त्योहारों के अवसर पर विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम, मेले अदि भी आयोजित किये जाते हैं।

संक्षेप में, ऑस्ट्रेलिया में, हिंदी के प्रचार-प्रसार में, महत्वपूर्ण कार्य हो रहा है, यद्यपि अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है। आशा है कि भविष्य में, ऑस्ट्रेलिया में हिंदी का पठन-पाठन करने वाले लोगों की संख्या में वृद्धि होगी और भारत के आर्थिक शक्ति में उभरने के साथ-साथ, ऑस्ट्रेलिया तथा अन्य देशों में न केवल भारतीय उद्गम के व्यक्तियों में बल्कि वहाँ के स्थानीय लोगों में भी हिंदी की लोकप्रियता बढ़ेगी।

-डॉ० दिनेश
श्रीवास्तव,मेल्बर्न,
ऑस्ट्रेलिया

-डॉ० दिनेश श्रीवास्तव पिछले 25 वर्षों से भी अधिक समय से ऑस्ट्रेलिया में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में लगे रहे हैं। विक्टोरिया के एक सार्वजानिक पुस्तकालय में हिन्दी पुस्तकों का सर्वप्रथम संग्रह स्थापित करना, विक्टोरिया में सर्वप्रथम हिन्दी कक्षा का प्रावधान करवाना, ऑस्ट्रेलियाई हाई-स्कूलों की अंतिम परीक्षा तथा राष्ट्रीय अनुवादकों तथा दुभाषियों की परीक्षा में हिन्दी को मान्यता दिलवाना उनकी कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ हैं। पिछले आठ वर्षों से डॉ० दिनेश 'साउथ एशिया टाइम्स' मासिक समाचार-पत्र के हिन्दी परिशिष्ट, 'हिन्दी-पुष्प' का संपादन कर रहे हैं।

दोपहर की चाय

भारत में पैर रखते ही काफ़ी कल्चर शॉक लग चुके थे। इमिग्रेशन-ऑफ़िसर से झगड़ा किया, कुली को नसीहत देने का मजा चख लिया, टैक्सी-ड्राइवर की चोरी और सीना जोरी देखी और उसकी लाल-पीली आंखों का करारा जवाब दिया तब जाकर घर पहुँचा तो लगा किसी सुखे रेगिस्तान से हिल-स्टेशन आ पहुँचा हूँ। यहाँ अपने परिवार में आकर अपनों का प्यार और आदर मिला। सोंचता हूँ—भारत के किसी भी परिवार में आपस में या तो गहरा प्रेम है या गहरा वैमनस्य; पश्चिमी जगत की तरह उदासीनता तो बिल्कुल नहीं। मैं इस मामले में कुछ सौभाग्यशाली रहा हूँ पर यहाँ आकर भी मुझे तकलीफ़ इस बात की होने लगी कि मेरी भाभी या भतीजी उठ कर पीने का पानी नहीं लेने देते थे। मेरी कीटाणु-रहित पानी की बोतल खाली होने पर उबाल कर ठन्डा किया पानी मुझे हाथ में मिल जाता था। पत्नी तक यहाँ आकर इतनी सेवाभावी हो गई थी कि वह मेरे बाथरूम में घुसने से पहले टोवेल (तौलिया) सलीक़े से रख देती थी कि भाभी के सामने नीचा न देखना पड़े या भाभी खुद उठ कर टोवेल न रख दें।

गैस ऑन करने के बाद लाइटर जलाया पर वह भी ढपोल-शंख था जो “टिक-टिक” करता रहा पर जलने का नाम न लेता था। ख़्याल आया कि लाईटर के होने और उसके दुरुस्त होने में फ़र्क होता है।

एक रोज घर की सभी स्त्रियाँ गई हुई थी किसी स्वामीजी की कथा सुनने। मुझे कुछ न कुछ घर का काम कर लेने की आदत सी हो गई है। मन ने कहा बन्दे ! यह स्वर्णिम अवसर है यहाँ आकर कभी तुझे एक कप चाय उठ कर ले आने तक का मौका नहीं मिला; बनाने की तो बात ही दूर। रंगे सियार की भांति मुझे भी अपनी स्वाभाविक आदत को अभिव्यक्ति देने की हूक उठी। सोंचा—एक कप चाय बना करके कर दे अपने अरमान पूरे। यहाँ कौनसा चूल्हा जलाना पड़ेगा? गैस तो गैस है—वह यहाँ पाइप से न निकले, सिलेन्डर से निकले इससे तुझे क्या फ़र्क पड़ता है? मैंने स्टोव का बटन घुमाया इस आस में कि स्टोव की गैस तो स्टार्टर से अपने आप जलने लगेगी। गैस की गन्ध से किचन भरने लगा पर स्टोव न जला। तब पास में पड़ा लाइटर देख कर समझ गया कि गैस जलाना पड़ेगा। गैस ऑन करने के बाद लाइटर जलाया पर वह भी ढपोल-शंख

था जो “टिक-टिक” करता रहा पर जलने का नाम न लेता था। ख़्याल आया कि लाईटर के होने और उसके दुरुस्त होने में फ़र्क होता है। दुरुस्त न होने पर भारत में लाइटर क्या कोई भी चीज़ दुरुस्त करवाई जा सकती है—सस्ते में। इसके लिये “होना” बहुत जरूरी है क्योंकि न होने वाली (या फैंक दी गई) वस्तु को आज तक कोई दुरुस्त नहीं करवा पाया। “टू बी ओर नोट टू बी” को मैं कुछ वक्र अर्थों में समझ रहा था।

चाय की बात अटक गई। दियासलाई बहुत ढूंढी पर न मिली। परसों लाईट गई थी अचानक! आस्ट्रेलिया में साल में एक बार "अर्थ-ऑवर"—पर्यावरण के लिये एक घंटा बिजली बन्द कर के अपने आप को धन्य समझते हैं वह भी सुरक्षा-बिजली की व्यवस्था के बाद! यहां तो रोज-रोज के "अर्थ-ऑवर" बिना बुलाये मेहमान की तरह चले आते हैं पर हाँ, तो परसों घर में मोमबत्ती जलाई गई थी। अब माचिस कहाँ पड़ी होगी भगवान जाने! भगवान शब्द दिमाग में आते ही ख़्याल आया कि भगवान के लिये अगरबत्ती और माचिस में "इक दूजे के लिये" वाला रिश्ता होता है। अहा क्या बात है! अगरबत्ती के पास माचिस क्या मिली भानुमति का पिटारा मिल गया। आस्ट्रेलिया वापस आने के महिनों बाद भी याद आता है कि उस रोज आखिर मैंने दोपहर की चाय बना ही ली थी।

-हरिहर झा, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (BARC) के कम्प्यूटर-विभाग में वैज्ञानिक अधिकारी के पद पर कार्य करने के पश्चात मेलबर्न के मौसम-विभाग में वरिष्ठ सूचना–तकनीकी अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं।
उपलब्धियां : बोलोजी.कॉम अँगरेजी वेब-पत्रिका पर 'सप्ताह के कवि' के रूप में सम्मान। मेलबर्न में द्वैमासिक "साहित्य-संध्या" का नियमित आयोजन। हिन्दी-टंकण का प्रचार व प्रशिक्षण। ऑस्ट्रेलिया व भारत में रेडियो चैनल पर वार्ता व कविता पाठ। सरिता के अलावा लेखनी, वेबदुनिया, हिन्दी-चेतना (केनेडा) तथा अन्य वेब पत्रिकाओं में प्रकाशित: साहित्य-कुंज। अनुभूति। कृत्या। हिन्द-युग्म। स्वर्ग-विभा। हास्य, आखर कलश। काव्यालय। परिकल्पना। सृजनगाथा, "अंग अंग में अनंग", "मृत्युंजय", "बूमरैंग – ऑस्ट्रेलिया से कवितायें", "गुलदस्ता" (भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया), "हिडन ट्रेज़र" (मेलबोर्न कवि एसोसिएशन) एवं "बाउन्डरीज़ ऑफ़ दी हार्ट" (गैलेक्क्षी प्रकाशन)

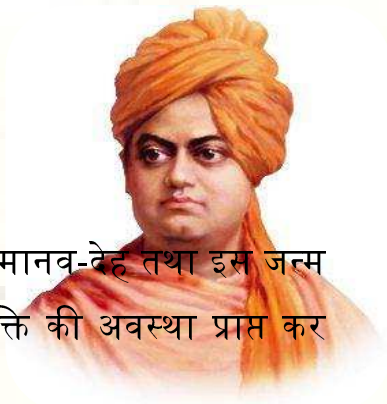

स्वामी विवेकानन्द के सुविचार

- मानव-देह ही सर्वश्रेष्ठ देह है, एवं मनुष्य ही सर्वोच्च प्राणी है, क्योंकि इस मानव-देह तथा इस जन्म में ही हम इस सापेक्षिक जगत् से संपूर्णतया बाहर हो सकते हैं–निश्चय ही मुक्ति की अवस्था प्राप्त कर सकते हैं, और यह मुक्ति ही हमारा चरम लक्ष्य है।
- जो मनुष्य इसी जन्म में मुक्ति प्राप्त करना चाहता है, उसे एक ही जन्म में हजारों वर्ष का काम करना पड़ेगा। वह जिस युग में जन्मा है, उससे उसे बहुत आगे जाना पड़ेगा, किन्तु साधारण लोग किसी तरह रेंगते-रेंगते ही आगे बढ़ सकते हैं।
- जो महापुरुष प्रचार-कार्य के लिए अपना जीवन समर्पित कर देते हैं, वे उन महापुरुषों की तुलना में अपेक्षाकृत अपूर्ण हैं, जो मौन रहकर पवित्र जीवनयापन करते हैं और श्रेष्ठ विचारों का चिन्तन करते हुए जगत् की सहायता करते हैं। इन सभी महापुरुषों में एक के बाद दूसरे का आविर्भाव होता है–अंत में उनकी शक्ति का चरम फलस्वरूप ऐसा कोई शक्तिसम्पन्न पुरुष आविर्भूत होता है, जो जगत् को शिक्षा प्रदान करता है।

सच का सौदा

निराशा ने कहा अब चैन से बैठो, कोई आशा नहीं। परंतु आशा बोली, अभी से निराशा का क्या कारण? पाँच सौ रूपये की नौकरी है, सैकड़ों प्रार्थना पत्र गए होंगे। उनको देखने के लिए कुछ समय चाहिए। सर्वदयाल ने निश्चय किया कि अभी एक अठवाड़ा और देखना चाहिए। उनको न खाने की चिंता थी, न पीने की। दरवाजे पर खड़े डाकिए की बाट देखते थे। उसे आने में देर हो जाती, तो टहलते-टहलते बाजार तक चले आते। परंतु अपनी इस अवस्था को डाकिए पर प्रकट न करते, और पास पहुँचकर देखते-देखते आगे निकल जाते। फिर मुड़कर देखने लगते कि डाकिया बुला तो नहीं रहा। फिर सोचते—कौन जाने, उसने देखा भी है या नहीं। इस विचार से ढाढ़स बँध जाती, तुरंत चक्कर काट कर डाकिये से पहले दरवाजे पर पहुँच जाते, और बेपरवा से होकर पूछते—"कहो भाई, हमारा भी पत्र है या नहीं?" डाकिया सिर हिलाता और आगे चला जाता। सर्वदयाल हताश होकर बैठ जाते। यह उनका नित का नियम हो गया था।

जब तीसरा अठवाड़ा भी बीत गया और कोई उत्तर न आया तो सर्वदयाल निराश हो गए, और समझ गए कि वह मेरी भूल थी। ऐसी जगह सिफ़ारिश से मिलती है, खाली डिग्रियों को कौन पूछता है? इतने ही में तार के चपरासी ने पुकारा। सर्वदयाल का दिल उछलने लगा। जीवन के भविष्य में आशा की लता दिखाई दी। लपके-लपके दरवाजे पर गए, और तार देखकर उछल पड़े। लिखा था—"स्वीकार है, आ जाओ।" वे सायंकाल की गाड़ी में बैठे, तो हृदय आनंद से गद्‌गद हो रहा था और मन में सैकडों विचार उठ रहे थे।

पत्र-संपादन उनके लिए जातीय सेवा का उपयुक्त साधन था। सोचते थे—"यह मेरा सौभाग्य है, जो ऐसा अवसर मिला। जो कहीं क्लर्क भरती हो जाता, तो जीवन काटना दूभर हो जाता। बैग में कागज ओर पेंसिल निकालकर पत्र की व्यवस्था ठीक करने लगे। पहले पृष्ठ पर क्या हो? संपादकीय व्यक्तव्य कहाँ दिए जाएँ? सार और सूचना के लिए कौन-सा स्थान उपयुक्त होगा? 'टाईटिल' का स्वरूप कैसा हो? संपादक का नाम कहाँ रहे? इन सब बातों को सोच-सोचकर लिखते गए। एकाएक विचार आया—कविता के लिए कोई स्थान न रखा, और कविता ही एक ऐसी वस्तु है, जिससे पत्र की शोभा बढ़ जाती है। जिस प्रकार भोजन के साथ चटनी एक विशेष स्वाद देती है, उसी प्रकार विद्वता-पूर्ण लेख और गंभीर विचारों के साथ कविता एक आवश्यक वस्तु है। उसे लोग रूचि से पढ़ते हैं। उस समय उन्हें अपने कोई सुहृद मित्र याद आ गए, जो उस पत्र को बिना पढ़े फेंक देते थे, जिसमें कविता व पद्य न हों। सर्वदयाल को निश्चय हो गया कि इसके बिना पत्र को सफलता न होगी। सहसा एक मनोरंजक विचार से वे चौंक उठे।

रात का समय था, गाड़ी पूरे वेग से चली जा रही थी। सर्वदयाल जिस कमरे में सफर कर रहे थे, उसमें उनके अतिरिक्त केवल एक यात्री और था, जो अपनी जगह पड़ा सो रहा था । सर्वदयाल बैठे थे। खड़े हो गए, और पत्र के तैयार किये हुए नोट गद्दे पर रखकर इधर-उधर टहलने लगे। फिर बैठकर काग़ज पर सुंदर अक्षरों में लिखा:-

पंडित सर्वदयाल बी.ए., एडिटर 'रफ़ीक हिंद', अंबाला

परंतु लिखते समय हाथ काँप रहे थे, मानो कोई अपराध कर रहे हों। यद्यपि कोई देखनेवाला पास न था, तथापि उस काग़ज के टुकडे को, जिससे ओछापन और बालकपन छलकता था, बार-बार छिपाने का यत्न करते थे। जिस प्रकार अनजान बालक अपनी छाया से डर जाता हो। परंतु धीरे-धीरे यह भय का भाव दूर हो गया, और वे स्वाद ले-लेकर उस पंक्ति को बारम्बार पढ़ने लगे:-

पंडित सर्वदयाल बी.ए., एडिटर 'रफ़ीक हिंद', अंबाला

वे संपादन के स्वप्न देखा करते थे। अब राम-राम करके आशा की हरी हरी भूमि सामने आई, तो उनके कानों में वही शब्द, जो उस काग़ज पर लिखे थे:-

पंडित सर्वदयाल बी.ए., एडिटर 'रफ़ीक हिंद', अंबाला

देर तक इसी धुन और आनंद में मग्न रहने के पश्चात पता नहीं कितने बजे उन्हें नींद आई, परंतु आँखे खुलीं, तो दिन चढ़ चुका था, और गाड़ी अंबाला स्टेशन पर पहुँच चुकी थी। जागकर पहली वस्तु, जिसका उन्हें ध्यान आया, वह वही काग़ज का टुकड़ा। पर अब उसका कही पता नहीं था। सर्वदयाल का रंग उड़ गया, आँख उठाकर देखा, तो सामने का यात्री जा चुका था। सर्वदयाल की छाती में जैसे किसी ने मुक्का मारा, मानो उनकी कोई आवश्यक वस्तु खो गई। ख्याल आया—"यह यात्री कहीं ठाकुर हनुमंतराय सिंह न हो। यदि हुआ और उसने मेरा ओछापन देख लिया, तो क्या कहेगा? इतने में गाड़ी ठहर गई। सर्वदयाल बैग लिए हुए नीचे उतरे और स्टेशन से बाहर निकले। इतने में एक नवयुवक ने पास आकर पूछा—"क्या आप रावलपिंडी से आ रहे हैं?"

"हाँ, मैं वहीं से आ रहा हूँ। तुम किसे पूछते हो?"

"ठाकुर साहब ने गाड़ी भेजी है।"

सर्वदयाल का हृदय कमल की तरह खिल गया। आज तक कभी बग्गी में न बैठे थे। उचक कर सवार हो गए और आस-पास देखने लगे। गाड़ी चली और एक आलीशान कोठी के हाते में जाकर रूक गई। सर्वदयाल का हृदय धड़कने लगा। कोचवान ने दरवाजा खोला और आदर से एक तरफ खड़ा हो गया। सर्वदयाल रूमाल से मुँह पोंछते हुए नीचे उतरे और बोले—"ठाकुर साहब किधर हैं?"

कोचवान ने उत्तर में एक मुंशी को पुकारकर बुलाया और कहा, "बाबू साहब रावलपिंडी से आए हैं। ठाकुर साहब के पास ले जाओ।" *(जारी ...)*

सुदर्शन (वास्तविक नाम: बदरीनाथ) का जन्म सियालकोट (पाकिस्तान) में 1896 में हुआ था। इनकी कहानियों का मुख्य लक्ष्य समाज व राष्ट्र को स्वच्छ व सुदृढ़ बनाना रहा है। प्रेमचन्द की भांति सुदर्शन भी मूलत: उर्दू में लेखन करते थे व उर्दू से हिन्दी में आये थे। सुदर्शन की भाषा सहज, स्वाभाविक, प्रभावी और मुहावरेदार है। प्रेमचन्द परम्परा के कहानीकार सुदर्शन का दृष्टिकोण सुधारवादी है और इनकी प्रायः सभी प्रसिद्ध कहानियों में समस्यायों का समाधान आदशर्वाद से किया गया है। सुदर्शन 1945 में महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तावित अखिल भारतीय हिन्दुस्तानी प्रचार सभा वर्धा की साहित्य परिषद् के सम्मानित सदस्यों में थे। उनकी रचनाओं में हार की जीत, सच का सौदा, अठन्नी का चोर, साईकिल की सवारी, तीर्थ-यात्रा, पत्थरों का सौदागर, पृथ्वी-वल्लभ आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। *साभार:* hindisamaydotcom@gmail.com

अमर स्पर्श

खिल उठा हृदय,
पा स्पर्श तुम्हारा अमृत अभय!

खुल गए साधना के बंधन,
संगीत बना, उर का रोदन,
अब प्रीति द्रवित प्राणों का पण,
सीमाएँ अमिट हुईं सब लय।

क्यों रहे न जीवन में सुख दुख
क्यों जन्म मृत्यु से चित्त विमुख?

तुम रहो दृगों के जो सम्मुख
प्रिय हो मुझको भ्रम भय संशय!

तन में आएँ शैशव यौवन
मन में हों विरह मिलन के व्रण,
युग स्थितियों से प्रेरित जीवन
उर रहे प्रीति में चिर तन्मय!
जो नित्य अनित्य जगत का क्रम
वह रहे, न कुछ बदले, हो कम,
हो प्रगति ह्रास का भी विभ्रम,
जग से परिचय, तुमसे परिणय!

तुम सुंदर से बन अति सुंदर
आओ अंतर में अंतरतर,
तुम विजयी जो, प्रिय हो मुझ पर
वरदान, पराजय हो निश्चय!

20 मई 1900 में कौसानी, उत्तराखण्ड, भारत में जन्में सुमित्रानंदन पंत हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के चार स्तंभों में से एक हैं। अपने जीवन काल में अठ्ठाइस प्रकाशित पुस्तकों की रचना की जिनमें कविताएँ, पद्य-नाटक और निबंध सम्मिलित हैं। हिन्दी साहित्य की इस अनवरत सेवा के लिए उन्हें पद्मभूषण (1961), ज्ञानपीठ (1968), साहित्य अकादमी तथा सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार जैसे उच्च श्रेणी के सम्मानों से प्रतिष्ठित किया गया। *वीणा, स्वर्णधूलि, युगांतर, उत्तरा, युगपथ, चिदंबरा, कला और बूढ़ा चांद, लोकायतन, गीतहंस, पाँच कहानियाँ, हार, साठ वर्ष : एक रेखांकन* उनकी प्रमुख रचनाएं हैं।

कल रात तारों ने मुझ से पूछा

कल रात तारों ने मुझ से पूछा

क्या अब भी तुम्हें इंतज़ार है उसके आने का?

मैंने मुस्कुरा के कहा,

क्यों इंतज़ार की बातें करते हो ?

मुझे तो अब भी यकीन नहीं है उसके जाने का।

-नवनीत चौजर

भारतीय विद्या भवन से शिक्षित व लेखन, उत्पादन, निर्देशन, संपादन से जुड़े नवनीत चौजर सिडनी में द लाफिंग लायन कंपनी के संचालक हैं।

भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया राजपत्र

भारतीय विद्या भवन (*भवन*) एक गैर लाभ, गैर धार्मिक, गैर राजनीतिक, गैर सरकारी संगठन (एनजीओ) है| भवन भारतीय परंपराओं को ऊपर उठाये हुए, उसी समय में आधुनिकता और बहुसंस्कृतिवाद की जरूरतों को पूरा करते हुए विश्व के शैक्षिक और सांस्कृतिक संबंधों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है| भवन का आदर्श, '*पूरी दुनिया एक ही परिवार है*' और इसका आदर्श वाक्य: '*महान विचारों को हर दिशा से हमारे पास आने दो*' हैं|

दुनिया भर में भवन के अन्य केन्द्रों की तरह, भवन ऑस्ट्रेलिया अंतर-सांस्कृतिक गतिविधियों की सुविधा प्रदान करता है और भारतीय संस्कृति की सही समझ, बहुसंस्कृतिवाद के लिए एक मंच प्रदान करता है और ऑस्ट्रेलिया में व्यक्तियों, सरकारों और सांस्कृतिक संस्थानों के बीच करीबी सांस्कृतिक संबंधों का पालन करता है|

अपने संविधान से व्युत्पन्न भवन ऑस्ट्रेलिया **राजपत्र** का कार्य है:

- जनता की शिक्षा अग्रिम करना, इनमें हैं:
    1. विश्व की संस्कृतियां (दोनों आध्यात्मिक और लौकिक),
    2. साहित्य, संगीत, नृत्य,
    3. कलाएं,
    4. दुनिया की भाषाएँ,
    5. दुनिया के दर्शनशास्त्र |
- ऑस्ट्रेलिया की बहुसांस्कृतिक समाज के सतत विकास के लिए संस्कृतियों की विविधता के योगदान के बारे में जागरूकता को बढ़ावा|
- समझ और व्यापक रूप से विविध विरासत के ऑस्ट्रेलियाई लोगों की सांस्कृतिक, भाषाई और जातीय विविधता की स्वीकृति को बढ़ावा|
- भवन की वस्तुओं को बढ़ावा देने या अधिकृत रूप में शिक्षा अग्रिम करने के लिए संस्कृत, अंग्रेजी और अन्य भाषाओं में पुस्तकों, पत्रिकाओं और नियतकालिक पत्रिकाओं, वृत्तचित्रों को संपादित, प्रकाशित और जारी करना|
- भवन के हित में अनुसंधान अध्ययन का पालन करना और शुरू करना और किसी भी अनुसंधान को जो कि शुरू किया गया है, के परिणाम को मुद्रित और प्रकाशित करना|

www.bhavanaustralia.org

भवन के अस्तित्व के अधिकार का परीक्षण

भवन के अस्तित्व के अधिकार का परीक्षण है कि क्या वो जो विभिन्न क्षेत्रों में और विभिन्न स्थानों में इसके लिए काम करते हैं और जो इसके कई संस्थानों में अध्ययन करते हैं, वे अपने व्यक्तिगत जीवन में एक मिशन की भावना विकसित कर सकें, चाहे एक छोटे माप में, जो उन्हें मौलिक मूल्यों का अनुवाद करने में सक्षम बनाएगा|

एक संस्कृति की रचनात्मक जीवन शक्ति इसमें होती है: कि क्या जो इससे सम्बंधित हैं उनमें 'सर्वश्रेष्ठ', हालांकि उनकी संख्या चाहे कितनी कम हो, हमारे चिरयुवा संस्कृति के मौलिक मूल्यों तक जीने में आत्म-पूर्ति पाते हों|

यह एहसास किया जाना चाहिए कि दुनिया का इतिहास उन पुरुषों की एक कहानी है जिन्हें खुद में और अपने मिशन में विश्वास था| जब एक उम्र विश्वास के ऐसे पुरुषों का उत्पादन नहीं करती तो इसकी संस्कृति अपने विलुप्त होने के रास्ते पर है| इसलिए भवन की असली ताकत इसकी अपनी इमारतों या संस्थाओं की संख्या जो यह आयोजित करती है, में इतनी ज्यादा नहीं होगी, ना ही इसकी अपनी संपत्ति की मात्रा और बजट में, और इसकी अपनी बढ़ती प्रकाशन, सांस्कृतिक और शैक्षिक गतिविधियों में भी नहीं होगी| यह इसके मानद और वृत्तिकाग्राही, समर्पित कार्यकर्ताओं के चरित्र, विनम्रता, निस्वार्थता और समर्पित काम में होगी| उस अदृश्य दबाव को केवल जो अकेला मानव प्रकृति को रूपांतरित कर सकता है, को खेल में लाते हुए केवल वे अकेले पुनर्योजी प्रभावों को रिहा कर सकते हैं|

बोधकथा

सार्थकता

एक चट्टान टूटी। छेनी-हथोड़ी की चोटों का दर्द सहकर एक प्रतिमा बनी और मंदिर में स्थापित हो गयी। चट्टान को ख़ुशी हुई।

चट्टान फिर टूटी। छेनी-हथोड़ी की मार को भूलकर कलात्मक मूर्ति बनी और ड्राइंगरूम की शोभा बढ़ाने लगी। चट्टान को अच्छा लगा।

चट्टान एक बार और टूटी। इस बार वह नीवं का पत्थर बनी, मंदिर और घर की सीढ़ियाँ बनी। चट्टान को थोड़ी ज्यादा प्रसन्नता हुई।

चट्टान आज सबसे ज्यादा खुश थी। उसे सुख और सार्थकता महसूस हो रही थी। आज चट्टान के रूप उसका अस्तित्व पूरी तरह समाप्त हो जाने वाला था।

चट्टान के टुकड़े-टुकड़े कर दिये गए। उससे बनी गिट्टी। गिट्टी लगी सड़क के निर्माण में। सड़क जो मंदिर-मस्जिद, दोनों तक ले जाती है... स्कूल-कॉलेज तक ले जाती है... रोजगार कार्यालय तक पहुँचाती है... पनघट और पार्क तक ले जाती है... खेत खलिहान तक पहुँचाती है... सड़क, जो मेहनतकशों को रोजी-रोटी दिलाती है।

-बालकृष्ण गुप्ता 'गुरु'

साभार: नवनीत हिन्दी डाइजेस्ट, अगस्त 2012

नीति-अनीति

एक गाँव में द्रोण नाम का एक ब्राह्मण रहता था। भीख माँगकर उसकी जीविका चलती थी। उसके पास पर्याप्त वस्त्र भी नहीं थे। उसकी दाढ़ी और नाखून बढ़े रहते थे। एक बार किसी यजमान ने उस पर दया करके उसे बैलों की एक जोड़ी दे दी। लोगों से घी-तेल-अनाज माँगकर वह उन बैलों को भरपेट खिलाता रहा। दोनों बैल खूब मोटे-ताजे हो गये।

एक चोर ने उन बैलों को देखा, तो उसका जी ललचा गया। उसने निश्चय किया कि वह बैलों को चुरा लेगा। जब वह यह निश्चय कर अपने गाँव से चला, तो रास्ते में उसे लम्बे-लम्बे दाँतों, लाल-आँखों, सूखे बालों वाला एक भयंकर आदमी मिल गया।

"तुम कौन हो?" चोर ने डरते-डरते पूछा।

"मैं ब्रह्मराक्षस हूँ," भयंकर आकृति वाले ने उत्तर दिया और पूछा, "तुम कौन हो?"

चोर ने उत्तर दिया, "मैं क्रूरकर्मा चोर हूँ। पासवाले ब्राह्मण के घर से बैलों की जोड़ी चुराने जा रहा हूँ।"

राक्षस बोला, "प्यारे भाई, मैं तीन दिन में एक बार भोजन करता हूँ। आज मैं उस ब्राह्मण को खाना चाहता हूँ। हम दोनों एक मार्ग के यात्री हैं। चलो, साथ-साथ चलें।"

वे दोनों ब्राह्मण के घर गये और छुपकर बैठ गये। वे मौके का इन्तजार करने लगे। जब ब्राह्मण सो गया, राक्षस उसे खाने के लिए आगे बढ़ा। चोर ने उसे टोक दिया, "मित्र, यह बात न्यायानुकूल नहीं है। पहले मैं बैल चुरा लूँ, तब तुम अपना काम करना।"

राक्षस बोला, "बैलों को चुराते हुए खटका हुआ, तो ब्राह्मण जरूर जाग जाएगा। फिर मैं भूखा रह जाऊँगा।"

चोर बोला, "जब तुम उसे खाने जाओगे, तो कहीं कोई अड़चन आ गयी, तो मैं बैल नहीं चुरा पाऊँगा।"

दोनों में कहा-सुनी हो गयी। शोर सुनकर ब्राह्मण जाग गया। उसे जागा हुए देखकर चोर बोला, "ब्राह्मण, यह राक्षस तेरी जान लेने लगा था। मैंने तुझे बचा लिया।"

राक्षस बोला, "ब्राह्मण, यह चोर तेरे बैल चुराने आया था। मैंने तुझे लुटने से बचा लिया।"

इस बातचीत से ब्राह्मण सतर्क हो गया। उसने अपने इष्ट देव को याद किया। राक्षस फौरन भाग गया। फिर डण्डे की मदद से ब्राह्मण ने चोर को भी मार भगाया।

संपादन - कमलेश्वर *साभार:* hindisamaydotcom@gmail.com

पाठक कहते हैं

****

नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट के ज़बर्दस्त अंक के लिए धन्यवाद। पढ़ने के लिए बहुत ही शिक्षाप्रद और रोचक है।
-सुमन, कवयित्री और ग्राफिक कलाकार

हमें भवन ऑस्ट्रेलिया की ईमारत निर्माण परियोजना के लिए आर्थिक सहायता की तलाश है|

कृपया उदारता से दान दें |

नोट: हम अपने पाठकों की स्पष्टवादी, सरल राय आमंत्रित करते हैं |

हमारे साथ विज्ञापन दें!

नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट में विज्ञापन देना आपकी कंपनी के ब्रांड के लिए सबसे अच्छा अवसर प्रदान करता है और यह आपके उत्पादों और / या सेवाओं का एक सांस्कृतिक और नैतिक संपादकीय वातावरण में प्रदर्शन करता है |

भवन ऑस्ट्रेलिया भारतीय परंपराओं को ऊँचा रखने और उसी समय बहुसंस्कृतिवाद एकीकरण को प्रोत्साहित करने का मंच है |

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : info@bhavanaustralia.org

महात्मा गाँधी कहते हैं

मुट्ठीभर संकल्पवान लोग, जिनकी अपने लक्ष्य में दृढ़ आस्था है, इतिहास की धारा को बदल सकते हैं।

अगर हम लोकतन्त्र की सच्ची भावना का विकास करना चाहते हैं तो हम असहिष्णु नहीं हो सकते। असहिष्णुता से पता चलता है कि हमें अपने उद्देश्य की पवित्रता में पूरा विश्वास नहीं है। बहुमत का शासन जब ज़ोर-जबरदस्ती का शासन हो जाए तो वह उतना ही असहनीय हो जाता है जितना कि नौकरशाही का शासन।

'अहिंसा' भय का नाम भी नहीं जानती।

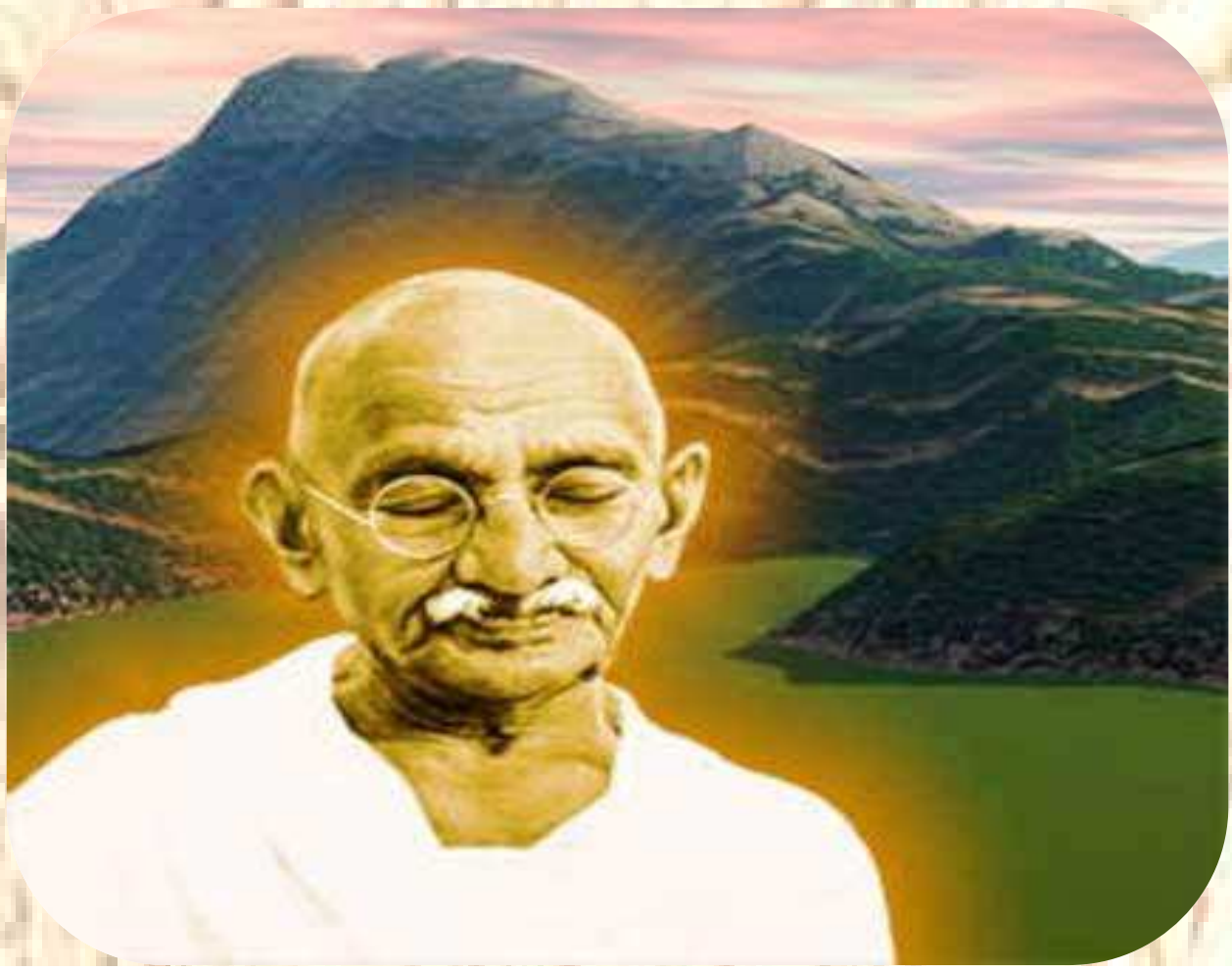

taxation & business guru

Taxation Guru - using their knowledge and expertise to stay ahead of the ever changing taxation legislation.

Whether you're a company, partnership, trust or sole trader, you need help with Super, Salary packages, Fringe benefits, Investments and deductions.

Call the Taxation Guru; the power to help you make the right decisions.

Remember only Death and Taxes are certain (and unavoidable)! However, of the two only the taxes are dynamic, blessed with the regime of an ever changing taxation system and legislation. Taxes continue haunting even after death.

We endeavour to take the burden off your shoulders and make life easy by providing a broad range of tax related services including:

Tax planning and preparing and electronically lodging Tax Returns for Income Tax, Fringe Benefits Tax (FBT), Goods and Services Tax (GST) and related taxes, Capital Gains Tax, State Taxes for a wide range of entities.

BMG GROUP

Suite 100, Level 4, 515 Kent Street, Sydney
t. +612 9267 9255 e. gambhir@bmgw.com w. www.taxationguru.pro / www.businessguru.pro